जॉयस मेयर

यीशु

नाम सब नामों से उत्तम

उसके अभिषेक का आपके जीवन में प्रदर्शन

यीशु नाम

सब नामों से उत्तम

यीशु नाम
सब नामों से उत्तम

उसके अभिषेक का
आपके जीवन में प्रदर्शन

लेखिका
जॉयस् मेयर

JOYCE MEYER
ministries

Post Bag No.1, Jubilee Hills, Hyderabad 500 033

All Scripture quotations, unless otherwise indicated, are taken from *The Amplified Bible (AMP). The Amplified Bible, Old Testament.* Copyright 1965, 1987 by The Zondervan Corporation. *The Amplified New Testament,* copyright © 1954, 1958, 1987 by The Lockman Foundation.

JESUS — Name Above All Names - *Hindi*
Releasing His Anointing in Your Life

Copyright © 2000 by Joyce Meyer

Printed at
CAXTON PRINTERS
Red Hills, Hyderabad-500 004

सूचीपत्र

परिचय 7

१.उसके नाम में सामर्थ्य है। 11

२. नाम और विश्वास 23

३.नाम का प्रयोग करना 37

४.उसके नाम को व्यर्थ में न लेना 51

५.आदर और सम्मान 61

६.नाम और सम्बन्ध 71

निष्कर्ष 77

प्रभु यीशु के साथ व्यक्तिगत रिश्ता पाने के लिए प्रार्थना 79

लेखिका का परिचय 80

परिचय

देव मनुष्य के नाम में क्या रखा है उसके नाम में इतनी सामर्थ्य होती है बहुत लोग इसे समझ नही पाते।

एक नाम एक मनुष्य का प्रतिनिधि होता है। वह उसके चरित्र को जीवन देता है। वह उसका समीकरण करता है और दूसरों से अलग करता है।

जब हम किसी को उसके नाम से बुलाते हैं, हम सिर्फ एक नाम नहीं पुकारते, हम उस मनुष्य के बारे में कुछ घोषित करते है।

इसी तरह जब हम यीशु मसीह का नाम बोलते हैं हम केवल उसका नाम ही नहीं बुलाते है। हम उसके नाम कि घोषणा भी करते है। जो कि मनुष्य कि सामर्थ्य नहीं है, परन्तु वह सारी सामर्थ्य और अधिकार परमेश्वर का है।

(कुलुस्सियों २:१०)

जब हम एक नाम पुकारते है तब हम उस मनुष्य का वर्णन करते हैं। यीशु का अर्थ हैं मुक्ति देने वाला और हम उसे उसी प्रकार से बुलाते हैं जैसे वह हमारे लिए करता है। वह हमें पाप से बचाता हैं, हमारी असफलताओं से, हमारी गलतियों से और वे सब परिस्थितियों जो उसके इच्छा के विपरीत हैं।

(देखें मत्ती १:२१)

बाइबिल हमें सिखाती है कि यीशु मसीह के नाम के ऊपर और कोई नाम नहीं है। हमें सिखाती है कि जैसे कि हम यीशु मसीह का नाम पुकारते हैं

वैसे ही हर प्राणी की यीशु मसीह के नाम में सामर्थ्य और अधिकार है, स्वर्ग में, पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे।

(फिलिप्पियों २:६:१०)

यीशु का नाम यीशु को प्रकट करता है तो जब हम उसके नाम से प्रार्थना करते है, तो ऐसा लगता है कि जैसे यीशु मसीह ही प्रार्थना कर रहे है।

जब हम प्रार्थना करते समय यीशु का नाम लेते है, सामर्थ्य उसी समय हमारे लिए हाज़िर हो जाती है।

किस प्रकार की सामर्थ

दूसरों का आशीष देने के सामर्थ्य, वह सामर्थ्य जो हमारे लिए सहायता लाती है, सामर्थ्य सब अच्छी योजनाओं के लिए जो परमेश्वर ने हमारे लिए रखी है।

बहुत सी बार सभाओं और जो में करती हूँ, जब मैं सेवा कर रही होती हूँ, मन से यीशु का नाम लेती हूँ। और जब मैं ऐसा करती हूं मैं उसकी उपस्थिति को कर्मों में महसूस कर सकती हूं। मुझे विश्वास है कि लोग चंगाई पा रहे है और आत्मा से भर रहे हैं। हमें यीशु के नाम कि जो सामर्थ्य को पकड़ता है उसको प्रकाशन करने की और आवश्यकता है।

कुछ सालों पहले मैने एक किताब लिखी थी, वचन, नाम, खून। अभी कुछ समय पहले जब मैं यीशु के नाम पर पढाने जा रही थी तो उससे पहले मैंने यीशु के नाम वाला भाग पढ़ा। मुझे विश्वास था कि परमेश्वर मुझे उस क्षेत्र के लिए उत्साहित कर रहा था। मैंने यह जाना है कि परमेश्वर मुझे यीशु के नाम और अधिकार के बारे में नई बातें सिखाएगा।

चाहे हम परमेश्वर के नाम में जो सामर्थ्य है उसके बारे में कितना भी जान लें पर उसके अतिरिक्त और भी बात है जो हम सीख सीखते है। या हमें उन बातों को ताज़ा करना हैं जिन्हें हम पहले सीख चुके है।

परमेश्वर नहीं चाहता कि हम उसके वचन में जो नींव के नियम है उन्हें भूल जाएं। वह यह जानता है कि अगर हमारा विश्वास इस भाग में उत्तेजित न हुआ तो चाहें हम जीवन में कुछ भी कर लें हम उसका हल नहा निकाल सकते हैं।

अगर आप एक मसीही होने के नाते आप को ऐसा लगता है कि कुछ काम ठीक से नहीं हो रहा है जैसे कि हुआ करता था, तो यह इसलिए हो सकता है कि आप उस दृष्टि को खो चुके हो जो नींव के नियम के शब्दों में यीशु के नाम के सामर्थ्य के बारे में हैं।

आप को ऐसा लगता होगा कि इस बात से बढ़कर और भी बहुत सी बातें है जिनके लिए आप अपना समय और ध्यान को अर्पित करते होंगे पर आपको ऐसा कभी भय नहीं लगाना चाहिए कि परमेश्वर के नाम का अध्ययन करना महत्वपूर्ण नहीं है।

अगर आपका परमश्वेर के साथ एक व्यक्तिगत सम्बन्ध नहीं है तो आपको अभी एक बात जानना महत्वपूर्ण है। उसके नाम में वह सामर्थ्य है जो कि उन परिस्थितियों को बदल सकता है जिनसे आप जूझ रहे है। आपको बस एक कार्य करना है कि आप उस सामर्थ्य को ग्रहण कर लें जो कि वह अपने नाम के साथ दे रहा है ।

उसकी सामर्थ्य से आप आने वाली परेशानियों को झेल सकते है। मैं आपसे कुछ बातें बाँटना चाहती हूँ जो मैंने नाम में जो सामर्थ्य है के बारे में सीखी है जो कि आपके सोच विचार को नया कर देगी।

इस किताब में आप यह सीखने कि आप कैसे अपने विश्वास को परमश्वेर के नाम में जो सामर्थ्य है को उत्तेजित करें ताकि आप उसे एक प्रभाव पूर्ण अधिकार से प्रार्थना मे काम ला सकें। एक सेविका होने के नाते मैं जानती हूं कि मुझे इस क्षेत्र में अपने विश्वास को मजबूत रखना है क्योंकि अगर मेरा विश्वास मजबूत नहीं है तो मैं सेवा नही कर सकती। मुझे हर पल उस अद्भुत सामर्थ्य से सर्तक रहना चाहिए जो मेरे बोलते ही प्रवाहित होती है।

मैं प्रार्थना करती हूं कि जब तक आप यह किताब को पूरी कर लेते हैं तब तक आपका परमेश्वर में जो विश्वास हैं और उसके नाम में जो विश्वास है उत्तेजित हो और आप एक अलग तरीके से प्रार्थना करना शुरु कर सकें कि जब आप उस अदभुत नाम को बोलें तो वह अगर जाकर वह कर सके जो होना है। आप अपने और दूसरों के जीवन में बदलाव को अनुभव करना शुरू करेंगे जिनके लिए आप ने जीवन भर इंतेजार किया है।

जैसे ही आप इस वचन को परमेश्वर से है, यीशु के नाम में सामर्थ्य जो कि हर नाम से ऊँचा है ग्रहण करें वैसे ही आप को आशीष मिले।

उसके नाम में सामर्थ्य है

"उसके नाम में सामर्थ्य है।"

और (उसकी सामर्थ्य हमारी ओर जो विश्वास करते है,) कितनी महान हैं, उसकी शक्ति के प्रभाव के उस कार्य के अनुसार.

इफिसियों १:१६

कल्पना कीजिए कि क्या होगा कि आप के पास इतना सामर्थ्य हो जो आपको अपनी ही परिस्थितियों में पराजित न कर सकें - सामर्थ्य जो महान है कि उसकी शक्ति उसका तेज नापा भी न जा सके। इस भाग में प्रेरित पौलुस ने हमें यह बताया है कि यही वह सामर्थ्य है जो पूर्ण रुप से यीशु के द्वारा प्राप्त हुई है। बहुत से मनुष्य अपने जीवन में उस सामर्थ्य का अनुभव करना चाहते हैं। किन्तु वे यह नहीं जानते कि उस सामर्थ्य को प्रवाहित करने के लिए एक महत्वपूर्ण कुंजी है।

विश्वास से उस नाम को बोलना। बाइबिल हमें बताती है कि यीशु का नाम सब नामों में सर्वश्रेष्ठ है। यह नाम आकाश और पृथ्वी पर सबसे ऊँचा और सबसे सामर्थी है। और उसका नाम हमें दिया गया है ताकि हम सिर्फ उस पर विश्वास करें।

हम क्या विश्वास करते हैं? परन्तु इसलिए लिखे गये हैं, कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास करके उसके नाम में जीवन पाओ॥

यूहन्ना २०:२१

जब हम यीशु पर विश्वास करते हैं तब हम उसके साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध स्थापित करतें है और तब प्रभु यीशु की सामर्थ्य हमारी सहायक बन जाती है।

परमेश्वर के नाम पर विश्वास लाने से हम वो सभी वस्तुएँ प्राप्त कर सकते हैं जो उसने हमारे लिए उपलब्ध कराई है। निरन्तर प्रेम, शान्ति, आनन्द, चंगाई, सफलता, सुरक्षा, सामर्थ्य, उससे कहीं अधिक आपकी कोई भी स्थिति पर नियन्त्रण करने से बढकर हमारी स्थितियों और हमारी ताकत को हमारी परिस्थितियों के विपरीत बना देता है।

(इसके विपरीत थोड़ी देर सोचिए।)

जब हम परमेश्वर के पुत्र बन जाते हैं हर एक वस्तु जो उसके नाम में है हमारी हो जाती है। असहायक और असामर्थ्य सामर्थ्य बिना मेरे लोग निर्बुद्धि की नाई नाश हुए जातें हैं।

मेरे ज्ञान के न होने से मेरी प्रजा नाश हो गई.... होशे ४:६

लाखों लोग मसीहों को मिलाकर उस के नाम में पाई जाने वाली अदभुत सामर्थ्य का उन्हें जरा भी ज्ञान नही है।

मैं जानती हूँ और यह सच है कि मैं भी उनमें से एक थी। मैं कई वर्षो से इसाई थी जो हर हफ्ते चर्च जाती हो और कभी कभी कई बार हफ्तों में चर्च की अगुवाई भी की और प्रचारकों के समूह में भी कार्य किया। मेरे पति भी चर्च के अगुवे थे। पर मुझे किसी भी तरह का मार्ग दर्शन नही था कि प्रभु यीशु के नाम में कितना सामर्थ्य हैं।

आज बहुत से और बहुत ज्यादा भी नहीं जो मसीह हैं, सामर्थ्य रहित हैं। मैं सामर्थ्य रहित थी क्योंकि कोई भी मेरा मार्गदर्शक नही था।

ओह ! मैं यीशु का नाम लेती और यह एक तरीका था जो मैं हर दुआओं के आखिर में लगाती जैसा कि मुझे सिखाया गया था। परन्तु मुझे यह अंदाजा नही होता कि मैं क्या कर रही हूँ और इसलिए मैं सामर्थ्य रहित जीवन व्यतीत करती रही और मैं सामर्थ्य रहित थी कि अपने जीवन में सचमुच में कोई बदलाव ला सकूँ या अपने परिवार के जीवनों में या फिर दूसरों के जीवन में।

क्या आप जानते है कि आप मसीह जीवन व्यतीत कर रहें है और एक ऐसा जीवन जो बिना सामर्थ्य के जी रहे हैं।

दुःख के साथ कहना पङता है कि बहुत से मसीह एक सामर्थ्य रहित जीवन जी रहे है परन्तु प्रभु की इस प्रकार से इच्छा नहीं है। चर्चों में भी पहले इस तरह से नही था

पहले के चर्चों में सामर्थ्य का पाया जाना -

और प्रेरित बङी सामर्थ्य से प्रभु यीशु के जी उठने की गवाही देते रहें और उन सब पर बडा अनुग्रह था।

प्रेरितों के काम ४:३३

क्यों पहले के चर्चो में इतने सामर्थी कार्य हुआ करते थे?

क्यों हम प्रेरितों के काम की पुस्तक में पढ़ते हैं कि लोगों को चंगाई मिली शैतान की तो दुष्ट शक्तियाँ निकाली गयी और बहुत से जीवनो में एक बदलाव की घटनायें हुई।

क्यों बड़े-बड़े लोग अश्चर्यक्रम कर सकते थे चिहन और चमत्कार भी?

क्योंकि पहले के लोग जानते थे कि सामर्थ्य यीशु ही के नाम में है। और वे उस नाम को नियमानुसार योग्यता से जिस प्रकार प्रभु चाहता स्वीकार करते।

जब प्रेरित पतरस उस सामर्थी नाम को प्रार्थनाओं में उन व्यक्तियों के लिए करता जो जन्म से लंगड़े थे तो वह व्यक्ति चंगा हो जाता।

प्रेरितों के काम ३:१-८

फिलिप्पुस जो उस बडी भीड को प्रभु के राज्य के विषय और उस नाम के विषय प्रचार करते।

प्रेरितों के काम ८:१२

पौलुस ने उस स्त्री में से दुष्ट आत्मा को यीशु के नाम में आज्ञा देते हुये निकल जाने को कहा। उस स्त्री के अन्दर से एक भावी कहलाने वाली आत्मा कार्य कर रही थी (भविष्य में होने वाली बातों का बताना .....)

उसी वक्त वो आत्मा उस में से निकल आयी और वो स्त्री आज़ाद हो गयी।

देखें कि प्रेरितों के काम १६:१६-१८में।

ये सच है कि पहले के चेले जानते थे उस यीशु के सामर्थी नाम को और किस प्रकार उसका प्रयोग करें। उसकी आशीषों को प्राप्त करें और दूसरों को भी आशिषित करें।

सामर्थी नाम में बचें प्रेरितों के काम ४:३०

इस भाग में हम देखते है कि उस कठिन परिस्थितियों में सामर्थ्य है बड़े चिहनों के लिए आश्चर्यक्रम जैसे बीमारी में चंगाई और दुष्ट आत्माओं को निकालने के लिए।

बाइबिल हमें बताती है- और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं, क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्य में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।

प्रभु का वचन हमें प्रेरित करता है कि उसमें सामर्थ्य है किसी को बचाने की जो उसके नाम को पुकारते है।

प्रेरितों के काम २:२१

उद्धार सिर्फ यीशु के नाम पर विश्वास लाने से और अपने मार्ग को विश्वास से उसकी ओर फेरने से है।

(यदि आपने ऐसा कभी नहीं किया हो, और आप इच्छुक है इस पुस्तक के आखिर में एक प्रार्थना है, आप उसे करें।)

हम कुलुसियों १:१ में पढ़ते है -

क्योंकि उस में ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता संदेह वास करती है और दसवी पद में हमे बताया गया है?

और तुम उसी में भरपूर हो गये हो जो सारी प्रधानता और अधिकार का शिरोमणि है।

उसे थाम ले क्योंकि हर एक को सामर्थ्य यीशु के नाम में मिलती है और वो नाम चर्चों को दे दिया गया है।

उसका तेजस्वी नाम सामर्थ्य से भरा हुआ है। उसके नाम को प्रवाहित करने के लिए हमें विश्वास की आवश्यकता है। यदि हम हर दिन बहुत कष्ट का जीवन व्यतीत कर रहे हैं तो उसके नाम पर हमारे विश्वास में कमी होने का कारण है।

मैं चारों तरफ जा कर कह सकती हूँ यीशु के नाम में, सामर्थ्य है मैं यीशु के नाम में प्रार्थना कर सकती हूँ और यीशु के नाम में दुष्ट आत्माओं को निकाल सकती हूँ।

पर यदि हम विश्वास को अपनी प्रार्थनाओं में प्रवाहित नहीं करते और उसके नाम में नहीं बोलते और यदि मेरा विश्वास उत्तेजित हो तो वो सभी कार्य हो सकते है जो असम्भव है।

"आत्मिक हथियारों के नाम"

क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नही, पर गढ़ो को ढ़ा देने के लिये परमेश्वर के द्वारा सामर्थी है।

२ कुरिन्थियों १०:४

मैं विश्वास करती हूँ कि प्रभु भी हमें उत्तेजित करना चाहता है उन सभी सामर्थी स्त्री व पुरुषों को क्योंकि हम एक ऐसे युद्ध से घिरे हुऐ है जो कि आत्मिक युद्ध है.....

क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध, लहू और मांस से नही, परन्तु प्रधानों से, अधिकारियों से और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं।

इफिसियों ६:१२

यह युद्ध शारीरिक दुनियावी व स्वभाविक रुप से नहीं लड़ा जा सकता। शैतान और शैतान की सेना हमार दुश्मन है और हम उनसे केवल तभी लड़ सकते हैं जब हम आत्मिक राज्य में आत्मिक हथियारों के साथ हों। जिस प्रकार २ कुरिन्थियों १०:४ में हमें बताया गया है।

हम कल्पनाओं को, और हर एक ऊँची बात को, जो परमेश्वर की पहचान के विरोध में उठती है, खण्डन करते हैं, और हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते है।

(वस्तुएँ जो हमें घेरे में जकड़ी रहती है).....

एक सबसे सामर्थी आत्मिक हथियार जो हमें मिला है वो "यीशु का नाम" देखें (लूका १०:१७) यह एक आत्मिक युद्धसत्तर है।

जैसा यीशु वहाँ से आगे बढ़ा तो दो अन्धे उसके पीछे यह पुकारते हुए चले कि "हे दाऊद की सन्तान, हम पर दया कर।"

जब वह घर में पहुँचा तो वे अन्धे उसके पास आये, और यीशु ने उन से कहा, क्या तुम्हें विश्वास है, कि मैं यह कर सकता हूँ? उन्होंने उस से कहा, हाँ, प्रभु।

तब उसने उनकी आँखे छू कर कहा, तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे लिए हो।

और उनकी आँखे खुल गयी और यीशु ने उन्हें चिताकर कहा, सावधान, कोई इस बात को न जाने।

मत्ती ६:२७-३०

यीशु के नाम में सामर्थी के बारे मे मुझे मालूम है। मैं करीब बीस वर्षों से आधिक उस नाम में प्रार्थना एवं प्रचार करती आ रही हूँ। पर कुछ समय पहले प्रभु मुझसे भेंट करने के लिये आयें और मेरे विश्वास को उत्तेजित किया इस नाम के विषय पर ताजी जानकारी देते हुये कि हर एक विश्वासी पूरी सामर्थ्य को और अंधकार को प्राप्त कर सकता और जब मैं कहती हूँ कि प्रभु मुझसे भेंट करने आये इसका मतलब यह नहीं कि मैंने प्रत्यक्ष रुप से उन्हें देखा पर मेरा मतलब है कि वो मेरे हृदय को अपने नाम के लिये (यीशु के नाम) के लिए इस्तेमाल कर रहा है।

कुछ समय के लिए में उस नाम के बारे में धार्मिक पुस्तकों पर चिन्तत करती रही हूँ। मैं खासतौर पर ऐसा करती हूँ कि इससे पहले मैं बाहर जाऊँऔर दूसरों को वचन द्वारा प्रेरित करूँ। यह सदा मेरे विश्वास को उत्तेणित करता है कि जिससे जब मैं लोगों के सामने खड़ी होऊँ मैं उनके लिए प्रार्थना कर सकूँ, पूर्ण हृदय से विश्वास करते हूए कि जिससे सामर्थ्य (प्रभु यीशू कासामर्थ्य) पूरे सभा स्थल पर मुक्त हो सके लोगों की जिन्दागीयों के बन्धन को तोड़ने के लिए।

मैं मंच पर न ही खडी हो सकती है और न ही लोगों के लिये प्रातिज्ञा कर सकती हूँ जब तक मेरे हृदय में विश्वास नहीं होता कि सचमुच प्रभु यीशु के सामर्थी नाम के द्वारा आज कुछ बड़ा कार्य होने वाला है। जब तक हमारे पास विश्वास है यीशु के नाम में हमे किसी भी परिस्थिति के ऊपर से गुज़र सकते है जो हमारे विश्वास को चुनौती देता है, और उसके साथ जो हमें उस नाम के द्वारा प्राप्त है।

"विश्वास सामर्थ्य के साथ"

सो विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है।
रोमियों १०:१७

यीशु ने उसकी ओर इशारा किया है कि यह एक ऐसी सामर्थ जो हमारे अन्दर है जो हमसे प्रार्थना या हमारे मुहं से शब्दों द्वारा निकलती है। देखें मत्ती ३:१६

रोमियों १०:१७ में हमें बताया गया कि विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है।

यदि आप चंगाई के लिये परमेश्वर का वचन सुनते है, तो आपका विश्वास चंगाई ग्रहण करने के लिये उत्तेजित हो जाता है। यदि आप पैसे के लिये परमेश्वर के वचन को सुनते है, तो पैसे के लिये आपका विश्वास उत्तेजित हो जाता है। यदि आप प्रभु यीशु के नाम की सामर्थ्य के लिये परमेश्वर के वचन को सुनते है तो आपका विश्वास प्रभु यीशु के नाम के लिये उत्तेजित हो उठता है। जब आप ये पुस्तक पढ़ते है तो प्रभु यीशु मसीह के नाम की सामर्थ्य के वचनों को जोर से बोलें। जब आप इस पुस्तक को पढ़ना खत्म करेंगे तब आप हर प्रकार से प्रार्थना करने लग जायेंगे। जो कुछ भी आप प्रार्थना में मांगते है उसमें आपको और अधिक विश्वास होने लग जायेगा। आपके अन्दर एक आत्मविश्वास बढ़ने लगेगा। क्योंकि आप सामर्थ्य में विश्वास करते है और बाइबिल बताती है उसके नाम पर विश्वास लाने से वो आपकी है। (सामर्थ्य)

आप अन्तिम क्षण तक परमेश्वर की उन योजनाओं का अपने जीवन पर और उसकी आशीषों का जो उस ने आपके लिये रख छोडी है आनन्द उठा सकते है और निर्भर रह सकते हैं।

तब आप अपने विश्वास को उत्तेजना दृणता से सामर्थ्य में होकर यीशु के उस प्रतापी नाम को ले सकते हैं -

जो कि सब नामों में सबसे ऊँचा नाम है।

“नाम और विश्वास”

" नाम और विश्वास"

क्योंकि परमेश्वर की जितनी प्रतिज्ञाएँ है, वे सब उसी में हाँ के साथ हैं, इसलिये उसके द्वारा आमीन भी हुयी, कि हमारे द्वारा परमेश्वर की महिमा हो
२ कुरिन्थियों १:२०

बाइबिल में बहुत सी प्रतिज्ञायें है, जो हम पढ़ते है पर उन्हें अपने जीवन से गुज़रते नहीं देख पाते

ऐसा क्यों है? क्या समस्यायें हैं?

हम यकीनन महसूस करें कि हर एक अधिकार हमारे विश्वास करने से ही उत्पन्न होता हैं। ऐसा इसलिए नही कि बाइबिल में लिया है। वे इसलिये भी उत्पन्न नहीं होते कि हम यीशु पर विश्वास रखते, परन्तु वे इसलिये होती है क्योंकि हम उसकी सच्ची प्रतिज्ञाओं पर विश्वास रखते हैं। और अपने विश्वास को उन बातों पर रखते है जो यीशु ने हमसे कही हैं।

जिस प्रकार हमने इफिसियों १:१६ में जैसे प्रेरित पौलुस ने लिखा है, और उसकी सामर्थ्य जो हमारी ओर जो विश्वास करते हैं, कितनी महान है उसकी शक्ति प्रभाव के उस कार्य के अनुसार ।

मैं विश्वास करती हूँ कि वो सिर्फ कह नही रहा है किन्तु मैं चाहती हूँ कि आपको मालूम हो उस मापने वाली सामर्थ्य का जो यीशु के नाम पर विश्वास लाने से होती है। हाँ सचमुच में मैं चाहती हूँ कि आपको उस मापने वाली सामर्थ्य का पता हो जो यीशु के नाम पर विश्वास लाते है - और जो विश्वास करते है कि सामर्थ्य हमारी है।

हम कभी-कभी ये सोचते है जो साधारण विश्वास हम हमारे

उद्धारकर्ता प्रभु यीशु पर रखते है और जो प्रतिज्ञायें बाइबिल में हमें दी गयी वे एक विषय रुपी अनुसरण करती हुयी हमारे जीवन से गुजरती जायें।

इस तरह से विश्वास कार्य नही करता। हमें विशेष रुप से प्रतिज्ञाओं को विश्वास के द्वारा अपनाना होगा प्रभु के वचन से उदाहरण देने दीजिये।

चिह्न उन्हीं को प्रगट होते है जो प्रभु यीशु पर विश्वास रखते है।

और विश्वास करने वालो में ये चिह्न होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्टआत्माओं को निकालेंगे।

नई-नई, भाषा बोलेंगे, साँपों को उठा लेंगे, और यदि वे नाशक वस्तु भी पी जायें तोभी उनको कुछ हानि न होगी, वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे चंगे हो जायेंगे।

मरकुस १६:१७

इन प्रतिज्ञाओं को यीशु ने अपने चेलों को जब दिया जब प्रभु यीशु ने ये विचार किया कि वो सामर्थ्य और अधिकार उन पर भी हो और उसके तुरन्त बाद निदान प्रभु यीशु उनसे वादा करने के बाद स्वर्ग पर उठा लिया गया। और परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठ गया।

मरकुस १६:१६

मैं ऐसा नही विश्वास करती कि ये सब उन्हीं के साथ हुआ जो प्रभु यीशु पर विश्वास करते है परन्तु मैं विश्वास करती हूँ कि ये अलौकिक चिह्न उन्हीं का अनुगमन करेंगे जो यीशु पर विश्वास करते है और यह विश्वास करेंगे की ये चिह्न उनके साथ - साथ चलेंगे।

परन्तु मसीह यीशु का जो भवन है वे उन विश्वासियों का है जो अविश्वासी है।

मुझे मालूम है क्योंकि जैसा की मैंने पहले बताया है कि मैं भी काफी वर्षों से एक मसीही थी। मैं नया जन्म पायी हुयी थी। यदि मैं न जाती तो शायद मैं स्वर्ग जाती। परन्तु मैंने एक सामर्थ्य रहित जीवन बिताया।

मैं प्रभु यीशु पर विश्वास करती, परन्तु मैं उसके सामर्थी काम पर विश्वास नहीं करती। क्योंकि मुझे किसी ने भी उस सामर्थ्य के विषय नहीं पढ़ाया। मैंने कभी भी किसी को उस पर प्रचार करते नहीं सुना। मैं समझती थी कि प्रभु ही जिसके पास वो सामर्थ्य है। और यदि वो हमें इस्तेमाल करने के लिए चुनता है तभी ऐसा होता है और यदि वो हमे इस्तेमाल करने के लिये नहीं चुनता, तब मैं ऐसा कुछ भी नही कर सकती।

प्रभु यीशु के नाम में प्रार्थना करने में सामर्थ है जबकि मैं अपनी दुआओं में "यीशु के नाम में" का इस्तेमाल करती रही दुआओं के आखिर में और मुझे नही पता था कि मैं क्या करती रही।

जब मुझे पवित्रआत्मा का बपतिस्मा मिला था तब मैंने एक विश्वासी के अधिकार को सीखना शरु किया। मैंने विश्वास करना शुरु किया कि मेरे पास सामर्थ्य है। हम पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाते हैं।

(और उस अदभुत सामर्थ्य को पाते है उसकी इच्छा अनुसार अपने जीवन पर और इस तरह प्रभु से दुआ मांगते हुए हम बच जाते है।)

और तब जब हम एक विश्वासी प्रभु यीशु मसीह में पवित्रआत्मा का बपतिस्मा पाते हैं तब पवित्रआत्मा उसे ग्रहण करने योग्य बनाती है।

प्रभु की सामर्थ्य को हीनता के साथ समझायें और अनुभव कीजियें।

और जब मैंने उस पर विश्वास करना प्रारम्भ किया तब परमेश्वर की सामर्थ्य मेरे लिए ठहरने लगी तब मैं अपनी प्रार्थनाओं को यीशु के नाम में

इसलिये करने लगी और जब मैं इस्तेमाल करने लगी, मैं उन सामर्थी कार्यों को अपने जीवन पर और दूसरों के जीवन पर जो मेरे चारों तरफ थे, होते देखने लगी। ये काफ़ी नहीं कि आप यीशु के नाम पर विश्वास करे हमें ज़रुरत है कि हम उसके सामर्थी नाम पर विश्वास लायें - और - सच्चाई ये है कि हमारे पास वो सामर्थी है।

क्या आप ये विश्वास करते है और मानते है कि आप कमजोर है - या फिर आप सामर्थी हैं?

यदि आप के पास वो न मापने वाली सामर्थ्य मौजूद है पर हम उसे सचमुच महसूस नही कर सकते यदि हम उन परिस्थितयों को प्रदिवादित कर कहते रहते है इस चीजों को जैसेः "मैं ज़्यादा इस को ले सकती - मैं चोट खाई हुई हूँ", "मैं इस तरह से ज़्यादा दिन तक नही चल सकती ये बहुत ज़्यादा है मेरे लिये", "मुझे महसूस हो रहा है मैं इससे दूर हो रही हूँ - सब कुछ मेरे सर पड़ रहीं है, ये बहुत कठिन है मेरे लिये। मैं स्थिर नहीं रह सकती। मैं ऐसे नहीं, मैं वैसे नहीं, मैं नहीं..... "

समस्या ये है कि हम विश्वास नही करते कि सचमुच हमारे पास वो सामर्थ्य है। हम ज़रुर है कि उसके विषय बात करते और उसके विषय गाते भी है। परन्तु सच्चाई ये है कि हम इससे कहीं ज़्यादा ये विश्वास करते और महसूस करते है कि बाईबिल क्या कहती है।

कभी-कभी हम अपनी सोच को प्रभु मानने लगते।

और इस प्रकार समस्या ये है कि वो चिह्न हमारा अनुगमन नहीं करते क्योंकि हम ये विश्वास नहीं करते की वो हमारा पीछा कर सकते है।

"सिर्फ विश्वास करें"

यीशु ने उससे कहा, यदि तू कर सकता है, यह (क्या) बात हैं? विश्वास करने वाले के लिए (सब कुछ) हो सकता है।

मरकुस ६:२३

हर बार जब मैं लोगों के समूह में उन्हें प्रचार करती, मैं तब विश्वास करती कि मैं पवित्रआत्मा की अगुवाई में चल रही हूँ और तब तो मेरे द्वारा कार्य करके लोगों को प्रचार करता और उनकी ज़रुरतों को जानता।

(देखें १ कुरिन्थियों १२:४-११)

और जब मैं मचं पर कदम रखती तो मुझे आगे कि आराधना का नहीं पता होता। और मुझे ज़रा सा भी अंदाजा नहीं होता कि आगे क्या होने जा रहा है। मैं सिर्फ इतना विश्वास करती है कि चिन्ह मेरा अनुगमन करेगें क्योंकि बाईबिल में ऐसा कहा गया हैं। (देखें मरकुस १६:१७,१८) और मैं विश्वास करती हूँ कि प्रभु अपनी आत्मा से मेरी अगुवाई कर रहा है।

इसका परिणाम (मैं कोई अपने जलाल या घमण्ड के लिए नही कह रही) कि हमारे यहाँ जो अराधना सभायें होती वो ज़्यादा बुरी नही होती। ऐसा तुरन्त नहीं होता हम अराधना के बाद घर जाते अपने सरों को हिलाते हुए और ये कहते हुए कि परमेश्वर ने हमें भर दिया वो इतना भला है।

परमेश्वर की सामर्थ्य अराधना में बहुतायत के साथ महसूस की जा सकती है। और परमेश्वर का अभिषेक हर अराधना में बनता गया। ऐसा भी समय आया जबकि हमने देखा कि अराधना में यहाँ तक की तेरह सौ लोग पवित्रआत्मा का बपतिस्मा पायें लोग हमेशा चंगाई पाते थे नाम शारिरीक रीति से भावनात्मक रीति से और यहां तक आर्तिमक रीति से और ये सब तभी होता है जब हम विश्वास करते है। और हम अपना विश्वास प्रभु यीशु मसीह के नाम में तथा वो कौन है उसमें लगाते है। ये सब यीशु मसीह की ही

वजह से हुआ। उसकी अच्छाई उसकी दया और उसकी सामर्थ्य जो उसके अदभुत नाम में है।

प्रभु यीशु मसीह को देखों और उसी के नाम ने, उस विश्वास के द्वारा जो उसके नाम पर हैं, इस मनुष्य को जिसे तुम देखते हो और जानते भी हो सामर्थ्य ही है, और निश्चय उसी विश्वास ने जो उसके द्वारा है, इसको तुम सबके सामने बिल्कुल भला चंगा कर दिया है।

प्रेरितों के काम ३:१६

अगर हम उसके नाम की सामर्थ्य का आनन्द लेना चाहते है हमें अपने आपको उन बातों के लिए नहीं देखना चाहिये जो हम है ही नहीं। हमें यीशु मसीह को देखना चाहिये और हर वो चीज जो वो है और जो वो हमारे लिए कर सकता है हममें से होकर। मैं अपने प्रचार में अराधना समूह के सदस्यों को उत्तेजित करना चाहूँगी कि वो इस बात पर विश्वास करें कि जब वो स्तुति आराधना शुरु करने की अगुवाई करें तो शैतान को वहां से भागना होगा और लोगों को बचना होगा, चंगाई पाना होगा, और पवित्रआत्मा से भर जाना होगा। अपनी सभाओं के अन्दर मैं ऐसा कुछ नहीं करती जिससे समय नष्ट हो या किसी को प्रवाहित करुँ, मैं वहां सिर्फ एक कारण से होती हूँ कि बन्धुओं को छुड़ाऊँ यदि मैं यह विश्वास न करती कि मैं लोगों की मदद करुं ये लोगों की मदद कर रहा हूँ। तो मैं घर ही पर रुक जाती अपने बच्चों और नाती - पोतों के साथ। परन्तु मैं पूरे दिल से ये विश्वास करती हूँ कि जो मैं कर रहीं हूँ वो हज़ारों लोगों कि जरुरतों को पूरा कर रहा है। मुझे विश्वास है कि जब मैं, प्रभु यीशु के नाम में प्रार्थना करती हूँ तो कार्य अवश्य होगा - और ऐसा होता है मैं इसलिए ये नहीं कह रही कि मैं कि वह करती ही हूँ मुझे विश्वास है ये कार्य कर रहा है और जीवनों को परिवर्तित कर रहा है। यदि आप की जिन्दगी अस्त-व्यस्त है यदि आप अपनी परिस्थितियों के विपरीत विजयी नहीं हो रहे है तो अपने

विश्वास की जाँच परीक्षण कीजिए। याद रकिए यीशु मसीह ने स्वयं कहा है।

जब उस ने उन की आँखे छूकर कहा, तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे लिए हो।

मत्ती ६:२६

प्रार्थना करो और विश्वास करो इसलिये मैं तुमसे कहता हूँ, कि जो कुछ तुम प्रार्थना करके मांगो, तो प्रतीति कर लो कि तुम्हें मिल गया, और तुम्हारे लिए हो जायेगा।

मरकुस ११:२४

आप ऐसा कहते होंगे, कि मैं प्रभु यीशु के नाम में प्रार्थना करता हूँ और फिर भी मुझे कोई परिणाम नही मिलता आप शायद दिन में एक बार प्रभु यीशु मसीह के नाम में प्रार्थना करते होंगे लेकिन उसको स्वतन्त्र छोड़े बगैर। और दिन के बाकी के भाग में उसके नाम का व्यर्थ में इस्तेमाल करते होंगे और ऐसा भी हो सकता है कि आप प्रभु यीशु के नाम में प्रार्थना तो कर रहे है, लेकिन उसके नाम को अपनी प्रार्थना के अन्त में एक जादुई यन्त्र के रुप में लेकर। यदि ऐसा है, तो अभी से जब आप प्रभु यीशु के नाम बोलते है तो विश्वास के साथ, और ये विश्वास करते हुये कि अतः सामर्थ्य आपके लिये उपलब्ध है। जब मैं ऐसा करती हूँ मैं उसके नाम की सामर्थ्य को अनुभव करती हूँ, मैं उसे अपने अन्दर से निकलते हुए महसूस करती हूँ। बाइबिल ये कहते हुए कि उसके नाम में सामर्थ्य है कोई परिहास नही करती। जब मैं प्रभु यीशु के नाम को टेलीविज़न पर बोलती हूँ तो मैं ये विश्वास करती हूँ कि उसकी सामर्थ्य हवा की तरगों से होती हुई सीधे लोगों के घरों में प्रवेश करती है। उनकी सारी आवश्यकताओं को पूरी करती जो उसको सुनते और ग्रहण करते अपने दिलों में और विश्वास के द्वारा। प्रभु यीशु के नाम में उद्धार है उसके नाम में चंगाई है और छुटकारा है। शक्तियों को तोड़ने की सामर्थ्य है।

उसके नाम में जो कुछ भी है वो हमें प्राप्त हो जायें हमें सिर्फ वफादारी के नाम और वचन के साथ उस पर विश्वास करना है। यदि तुम मुझ में बने रहो, और मेरी बातें तुम में बनी रहें, तो जो चाहो मांगो, और वो तुम्हारे लिए हो जायेगा।
यहून्ना १५:७

मैं सोचती हूँ कि कभी-कभी हम मसीह लोग यीशु मसीह के वादों को अध्याय में से निकाल देते है हम ये सोच लेते है कि हमें जो चाहिये वो हम मांगेगे और परमेश्वर को उसे हमें देना ही है क्योंकि उसके नाम को हम अपनी प्रार्थनाओं के आखिरी में लेते है।

वचन को अनुवाद करने की रीति इस प्रकार है कि दूसरे वचन के प्रकाश में उसको अनुवादित किया जायें हमें सिर्फ यूहन्ना १५:७ के अध्याय में से उठाकर नही खींच निकालना चाहिये बिना १ यूहन्ना ५:१४, १५ को समझे हुए। जो यह कहता हैं - कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ मांगते है वो हमारी निवेदन को पूरा करेगा।

मैं इस बात को सोचा करती थी कि जितने भी अध्याय मैने पढ़े थे उनमें से ये अधिक प्रभावपूर्ण था।

ये शब्द(मुझमें बने रहो) का अर्थ है ठहर जाना, वास करना, हमेशा के लिए शरुआत करना, स्थिर रहना और बिल्कुल न हिलना-डूलना। जब से मैं अन्त में प्रभु यीशु के साथ बने रहने की शुरुआत करने लगी मैने ये सीखा कि मेरी इच्छा उसकी इच्छा के साथ मिलाकर एक हो गयी कि मुझे अवश्य ही ऐसा कुछ नहीं चाहिये था जो परमेश्वर की इच्छा के विपरीत हो। आज तक के दिन, अगर मेरे पास कोई ऐसा अध्याय है कि जो कुछ भी मैं परमेश्वर से मांगने के लिए प्रार्थना करुँ मैं परमेश्वर के पास जाती और उससे कहती हूँ कि ये तेरा वचन है और मैं चाहती हूँ कि ये मेरे जीवन में पूर्ण हो। लेकिन हम

बहुत सी चीजों जिनके लिए प्रार्थना करते है जिनके लिए हमारे पास कोई विशेष वचन नही ऐसे हालात में हमें प्रार्थना करनी चाहिये कि परमेश्वर, यहीं है जिसके लिये हम विश्वास करते है हमें इस परिस्थियों में चाहिये। यदि ये सही है मुझे यकीन है कि आप मुझे अवश्य देगें लेकिन यदि ये सही नही है तो मुझे ये नही चाहिये क्योंकि मुझे सिर्फ आपकी इच्छा चाहिये।

"मेरी इच्छा नही परन्तु तेरी इच्छा"

और वह आप उनसे अलग एक ढेला फेंकने के टप्पे भर गया, और घुटने टेक कर प्रार्थना करने लगा।

कि हे पिता यदि तू चाहे तो इस कटोरे को मेरे पाससे हटा ले, तौभी मेरी नहीं परन्तु तेरी ही इच्छा पूरी हो।

लुका २२:४१,४२

मेरा सबसे छोटा पुत्र उन्नीस वर्ष का था जब उसका विवाह हुआ। हमें मालूम था कि वो जवान है, पर उसके लिए हम ही सब कुछ थे। जिस लड़की से उसका विवाह हुआ वो सिर्फ अठारह वर्ष की थी लेकिन वो एक प्रचारक के परिवार से आयी थी और परमेश्वर के साथ उसका रिश्ता गहरा था। वो दोनों इतने प्यारे थे जितना वो रह सकते थे। अपने विवाह के उपहारों का एक हिस्सा कुछ पैसा उनके पास जो उन्होंने जमा किया था वो था जो उनको एक छोटे से घर की कीमत को चुकाने के लिये काफी था। यदि वो अधिक कीमत वाला न था। मेरे पति ने हमारे पुत्र को कई अच्छे गुण सिखाये थे कि किस तरह पैसे का उपयोग करें। वो किराये के मकान में अपना पैसा व्यर्थ नही करना चाहता था यदि वो खुद का मकान खरीद सकता। इसलिये हम लोग उनके साथ एक घर देखने गयें उन्हें एक पसन्द भी आया जिसका वो मूल्य भी दे सकते थे इसलिए वे उसके लिये बहुत उत्साहित हुये दूसरे दिन

हमारे पुत्र ने हमे बताया कि चैरीटी और मैं कल रात बहार गये और उस मकान के सामने बैठ कर हमने प्रार्थना करी कि यदि परमेश्वर तेरी इच्छा है कि हमें ये घर मिल सके तो हमें ये चाहिये। यदि इसके लिये आपकी इच्छा नही है कि हमें ये मिले तो हम जानते है कि हमारे लिये आपके पास इससे उत्तम कुछ है हमें वो ही चाहिये जो आपकी इच्छा के अनुसार हो। और ऐसा हुआ कि इससे पहले वो वहां जाकर उस घर को खरीदते किसी और ने उसे खरीद लिया। हम बड़े निराश हुये। उसने हमें बाद में बताया। लेकिन मुझे पूर्ण विश्वास है कि वो घर इसलिये बिक गया क्योंकि परमेश्वर के लिये हमारे पास इनसे भी उत्तम कुछ है और हमें उसके लिये ठहरना होगा। इसी तरह से चाहिये कि हम प्रार्थना करें जब हमें निश्चित न हो कि जो कुछ हम मांग रहें है उसमें परमेश्वर कि इच्छा उसके वचन के आधार पर है कि नही। हमारे बेटे और उसकी दुल्हन के लिये ये बुद्धिमानी न होती यदि वो उस घर के सामने बैठ कर ये प्रार्थना करते कि यीशु मसीह के नाम में ये घर हमारा है और अब हम किसी और घर को नही चाहते। हे पिता यही वो घर है जो हम चाहते है और हमारा ये विश्वास है कि आप हमारे लिये उपल्बध करा देगें। क्योंकि यीशु मसीह ने कहा है कि उसके नाम से हम जो कुछ भी मांगते है हमें मिल जायेगा।

जो कुछ भी हम प्रार्थना में मांगते है हमें मिल जायेगा यदि हम ये जाने कि जो कुछ हम मांग रहे है उसमें परमेश्वर कि इच्छा है या फिर हमारी ही इच्छा हो।

हमारे प्रति परमेश्वर कि इच्छा प्रार्थना और उसके वचन के अनुसार जान सकते है। तब जब हम अपने विश्वास को उसके वचन के आधार पर अपने जीवनों पर लागू करते है तब हम दृढ़ता से मांग सकते है जो हमारे लिये सचमुच सही है और यीशु मसीह के नाम का प्रयोग परिणाम के साथ प्रयोग कर सकते है।

“नाम का प्रयोग करना”

"नाम का प्रयोग करना"

और जो कोई प्रभु का नाम लेगा (प्रभु यीशु के नाम को उत्तेजित करना, ऊपर उठाना और आराधना करना) वही उद्धार पायेगा।

प्रेरितों के काम २:२१

मेरा एक मित्र जिसे मैने बाईबिल कालेज में पढ़ाया था और जो, एक कलीसिया की पुरोहित/धर्म गुरू में करने गया हुआ था। संकट के समय में, नाम को पुकारने का एक प्रबल तरीका बताता है। एक दिन उसका छोटा बैटा जो तीन या चार वर्ष का था उसके साथ कार में था वो एक बहुत ही भीड़ वाले क्षेत्र से जा रहा था और उसी समय उसने दाहिने हाथ की तरफ मुड़ने की तैयारी की उसे ये नहीं मालूम था कि उसके पुत्र के तरफ का दरवाज़ा बन्द है कि नही जैसे ही वो दाहिने ओर घूमा उनका पूरा वजन कार की उसी ओर हो गया ये उस समय की बात है जब सीट बैल्ट का नियम नहीं लागू हुआ था और वो बच्चा भी उसे नही पहने था।

जब उस आदमी ने ऐसा तेज़ घुमाव लिया तब कार का दरवाजा तेजी से खुल गया और वो छोटा लड़का मोटर में से लुड़क कर के ठिक बीचों-बीच में गिर गया जहां की बहुत तेज़ ट्रेफिक आ जा रही थी। जब पिता ने चारो तरफ से ट्रेफिक देखा तो वो बहुत भयभीत हो गया जब उसने ये देखा एक कार के चारों पहिये तेज़ी से घूमते हुए आ रहे थे और उसके बच्चे के ऊपर से गुज़रने ही वाले थे तो केवल एक ही काम कर सकता था कि वो चीखा यीशु।

पिता ने अपनी कार रोकी और कूद कर अपने लड़के के पास भागा जो बिल्कुल सही था तब वो उस व्यक्ति की तरफ घूमा जिसने करीब - करीब

अपनी कार चढ़ा दी थी और जोर से बोला धन्यवाद। धन्यवाद आपका बहुत - बहुत धन्यावाद आपकी गाड़ी को सही समय पर रोकने के लिये परन्तु वो व्यक्ति जो कार चला रहा था और करीब-करीब उसने अपनी गाड़ी चढ़ा दी थी वो बहुत भयभीत था मेरा मित्र उसके पास गया और उसको आश्वासन देने की चेष्टा करने लगा, आप घबराईयें नही मेरा पुत्र बिल्कुल ठीक है। उसके विषय में आप चिन्ता न करें पर परमेश्वर का धन्यवाद करें कि उसने आपकी गाड़ी रोकने में मदद की ।

वो आदमी हिल रहा था बार-बार ये कहते हुये कि आप नहीं समझ सकते, आप नहीं समझ सकते। पिता ने उससे पूछा कि आखिर बात क्या है उसने कहा कि मैने ब्रेक के ऊपर अपने पैर भी नहीं रखे उस नाम की सामर्थ्य ने उसकी कार को रोक दिया। ये एक संकेत का समय था। किसी के लिए कछ करने के लिय कुछ भी नहीं था सोचने के लिये, विचारने के लिए, और कारण के लिये कोई समय नहीं था। हंलाकी ऐसा कुछ भी नहीं था जो वो व्यक्ति कर सकता था यीशु मसीह के नाम ने विजयी बनाया। क्योंकि सामर्थ्य के चमत्कार का काम इस दृश्य पर था उस बालक का जीवन बचाया जाये।

"नाम में सामर्थ्य और अधिकार"

फिर उसने बारहों को बुलाकर उन्हे सब दुष्टआत्माओं और बिमारियों को दूर करने की सामर्थ्य और अधिकार दिया। और उन्हे परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने और बीमारों को अच्छा करने के लिये भेजा।

लूका ६:१,२

हमारी अराधनाओं में प्रचार के साथ-साथ सेवा का भी समय अवश्य होता था। हमारे पास प्रार्थना की कतारें होती थी जिसमें मैं एक-एक व्यक्ति के

लिये प्रार्थना करती मुझे ऐसा करना अच्छा लगता है परन्तु मेरी अराधनायें बढ़ती जा रही थी और यदि में ऐसा करती तो मुझे और कुछ करने के लिए नहीं रह जाता मैंने ये सीखा कि मैं प्रभु यीशु मसीह के नाम में प्रार्थना करूँ और उस पर अटल रहूं।

अपने विश्वास को प्रवाहित करके। सभा में लोग चंगाई कि सामर्थ्य को पा सकें उसी विश्वास के साथ जैसा मैं प्रार्थना करती थी हर एक व्यक्ति के लिये अलग-अलग। जब लोग मेरी आराधनाओं में बोझ और तनाव से दबे हुये आते है मैंने ये सीखा कि उन आत्माओं पर प्रभु यीशु मसीह के नाम में उन्हे अपने अधिकार में ले ताकि भारी पल उठा लिया जाये और लोग स्वतन्त्रतापूर्ण और आनन्द से भर कर जाये। परन्तु ऐसा नही है कि मेरी प्रार्थना है जो इस बन्धवाई के जुऐ को तोङती है येसामर्थी और अधिकार है जो प्रभु यीशु मसीह को नाम में करती है। मेरी प्रार्थना सिर्फ एक वाहन है जो उस सामर्थ्य को उठाती है।

"प्रतिनिधित्व की सामर्थ्य "

यीशु ने उनके पास आकर कहा, कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया हैं।

इसलिये तुम जाकर जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रआत्मा के नाम से बपत्तिस्मा दो।

और उन्हें सब बातें जो मैने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सीखाओं, और देखों, मैं जगत के अन्त तक तुम्हारे संग हूँ।

मत्ती २८:१८-१०

इस भाग में, यीशु मसीह कहता है, "आकाश और पृथ्वी के सारे अधिकार और सामर्थ्य मुझे दिया गया है और अब मैं तुम्हें देता हूँ।

जाओ और जो कार्य मैने किया है वो तुम भी करो और इससे ज्यादा सामर्थी कार्य मेरे नाम में तुम करोगे।"

यूहन्ना १४:१२

दूसरे शब्दों में प्रभु यीशु मसीह ने जो उस पर विश्वास करते है। उसने सारी सामर्थ्य का उन्हें प्रतिनिधि बना दिया और अधिकार दे दिया। उसके नाम का इस्तेमाल करने के लिए।

इसलिए कोई भी विचार नहीं रहा हमारे विलाप के लिए, आँसू बहाने के लिए, सामर्थ्य रहित और कमज़ोरी के लिए।

यहां यह विचार नही है कि आप शांत रहें, और अपने आप को दे दें। हम यह महसूस करते है कि यदि हम शांति के साथ उस नाम को परमेश्वर के उस स्थान तक जितना हमें उपलब्ध है इसलिए मिली है पर हमें कोई जय प्राप्त नहीं होती है और इसी में हम अपने आप में ही संघर्ष करते रहते हैं। हमें वो सभी मूर्खतापूर्ण कथन को त्यागना होगा जो यीशु के नाम से इस्तेमाल किये जाते हैं जैसे - "ओह मेरे प्रभु मैं कितनी गर्म हूँ", "मैं कितनी ठंडी हूँ", "मेरे प्रभु मैं कितनी भूखी हूँ", "मैं कितनी कमजोर हूँ"। जब हम उस तेजस्वी नाम को बोलते हैं, तो हमें उद्देश्य के लिए आदर और सम्मान के साथ एक पहचान देते हुए कि उसमें वो सामर्थ्य और अधिकार पाया जाता है।

हमें मालूम होना चाहिए कि जब हम यीशु मसीह के नाम को बोलते है तो हम अपने सामने उस वायुमंडल में जो सब उसका है पुकार रहे हैं और

उसका नाम उसे दर्शाता है और उसका स्थान ले लेता है। जब उसका नाम लिया जाता है वो वहां होता है और यही वो अर्थ है, सामर्थ्य के प्रदिनिधित्व का।

मेरे पास, मेरी आँटी के कारोबार को प्रतिनिधित्व करने की शक्ति है। मुझे उनके चेक पर भी हस्ताक्षर करने का अधिकार है, पैसों के खर्च करने का, उनके खर्च को चुकाने का व जमीन बेचने का भी। मुझे यह सामर्थ्य और अधिकार इसलिए प्राप्त है क्योंकि उन्होंने मुझे एक सामर्थी प्रतिनिधित्व के रुप में ठहराया था।

यही वह है जो प्रभु यीशु मसीह ने आपको और हमारे लिये दिया है। प्रभु यीशु मसीह ने हमें उन परिस्थितियों में, सैद्धान्तिक और सामर्थ्य में उसने हमें उस पदवी पर नियुक्त करके उस सामर्थी प्रतिनिधित्व के रुप में ठहरा दिया है।

"नाम जो ध्यान कराता है"

और स्वर्गदूतों से उतना ही उत्तम ठहरा जितना उस ने उन से सुने उनसे बड़े पद का वारिस होकर उत्तम नाम पाया।

इब्रानियों १:४

बाइबिल के अनुसार जब प्रभु यीशु का नाम बोला जाता है तो सारा स्वर्ग ध्यान देता है। मुझे कतई आश्चर्य नही होता - कि जब हम ईमानदारी आदरपूर्ण और वफादारी से प्रभु यीशु मसीह का नाम लेते है तो सारा स्वर्ग यह कहता हैं

श .....

क्यों हम यह जानना चाहते है कि कोई व्यक्ति बहुत महत्वपूर्ण हैं? क्योंकि हम उस व्यक्ति के नाम को उतारना पसन्द करते है हम इसलिये उस नाम को इस्तेमाल करना पसन्द करते है क्योंकि वो हमें उसके नाम कि प्रमुखता से जोड देती है मेरी बेटी ने ये सीखा ये सच है

मैं अपने कार्यालय में उन काल्स (फोन) को नहीं सुनती हूँ न ही त मैं कुछ भी काम नहीं कर सकती हूँ इसलिए वो हमेशा पहले मेरे किसी सहकर्मी से बात करें या फिर मेरे लिए सूचना छोड़ दें और यही सच है बहुत से प्रबंधकों के लिये। ये कठिन है कि मैं उनसे व्यक्तिगत रुप से मिलूँ क्योंकि वो इतना व्यस्त रहते है मुझे कहना पड़ता है। अपनी ही एक बेटी से जो कि (मेरी उप अधिकारी है) "काल रोक्सन" कि उन्हें मुझे फोन पर दे दें क्योंकि मुझे उनसे बात करनी है।

अब मेरे बच्चे प्रमुख है और वो आदर के साथ सेवा में है, और वो जानते है कि उनके नाम इतने महत्वपूर्ण नही होते जितना कि मेरा नाम लेने से। और इस प्रकार यदि सैन्ड्रा कहें, "ये सैन्ड्रा है पर मुझे तो रेक्सन से बात करनी है", तो ये कोई सामान्य परिणाम नही होगा। यदि वह फोन करके कहती है मैं अपनी माँ के लिये बुला रही हूँ और मुझे ज़रुरत है राक्सन से बात करने कि।

मैंने अपने कर्मचारियों को ये बता रखा है कि जब मैं काल करूँ तो वो मेरे फोन को सीधा वहां पहुचायें। और ईसलिये क्योंकि हो सकता है कि मैं जाने की तैयारी मैं पर हूं और फिर मेरे पास कोई और दूसरा जरिया भी न हो फोन करने के लिये, और इसलिये मेरी बेटियों ने सीख लिया है कि वो मेरे नाम को कैसे प्रयोग में लाये ताकि उन्हें जल्दी परिणाम मिले और उनकी तरफ ध्यान भी दिया जायेगा।

इस प्रकार हम भी प्रभु यीशु के नाम के साथ है। हमें ज़रुरत है उस नाम को लेने की और सही नाम - यीशु का नाम। इस प्रकार हमें ज़रुरत है यीशु मसीह का नाम प्रयोग में लाने से हमें उसका ध्यान खीचने की, और वो सारे परिणाम जो हमारी ज़रुरत के है सुने रख छोड़े है ताकि हम वो हासिल करें जो उसके पास है और जो वह हमारे लिये करना चाहता है।

"प्रार्थना में उसके नाम का प्रयोग"

मैं तुमसे सच - सच कहता हूँ कि जो मुझ पर विश्वास करता है, वे कार्य जो मैं करता हूँ, वह भी करेगा, और इससे भी महान कार्य करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूँ।

(यूहन्ना १४:१२)

मैं उस सामर्थी आत्मा के विषय नही कहती। पर जब मैं प्रार्थना करती हूँ तब मैं यीशु के नाम को इस प्रकार से लेना चाहती हूँ। पच्छत्तर प्रतिशत प्रार्थनाओं में मैं प्रशंसा और अराधना करती हूँ। तब मैं पाती कि धन्यवाद रुपी भेंट चढ़ाने से मेरी प्रार्थनाओं में एक प्रभाव बढ़ता जाता है।

ये अच्छी बात है कि हम प्रभु यीशु मसीह से जाने, कि वह क्या चाहता है। यीशु मसीह ने बताया है कि हम उसके नाम में मांगे। यदि हम अराधना करने वाले और यदि हम धन्यवादित है और शुक्रगुज़ार से भरे है तब हम अपनी प्रार्थना का अधिक से अधिक समय परमेश्वर की बढ़ाई में व्यतीत कर सकते है। तब हम अपनी ज़रुरतों को प्रभु यीशु के नाम से दर्शा सकते है तब वह जल्दी हमारी ज़रुरतों को पूरा करने के लिये हमारी ओर फिरेगा।

बहुत बार मेरी अपनी व्यक्तिगत प्रार्थनाओं के समय जो कि बहुत मुख्य है मेरे लिये, मैं उसकी उपस्थिति में प्रवेश करती हूँ, और तब, मैं बार-बार उसके नाम को लेती हूँ, यीशु, यूशु, यूशु मैं तुमसे प्रेम करती हूँ मैं तेरे नाम को रौशन करती हूँ, मैं तेरे पवित्र नाम को ऊचाँ उठाती हूँ। मैंने सीखा जब मैं उस नाम को बोलती हूँ तब सामर्थ्य उतरती है तब बन्दी आज़ाद होते है और लोगों के सारे बन्धन तोड़े जाते है। जब मैं बोलती तो मैं चाहती हूँ कि सारे बीमार शिफा पायें और सारी दुष्टआत्मायें निकाली जायें। वो सामर्थ्य और अधिकार सिर्फ मुझे ही नही मिला, उसके नाम कि सामर्थ्य हर एक विश्वासियों को उपलब्ध है। आप ये नहीं जान सकते कि क्या होगा यदि आप विश्वासी जन अपने अभिक्षित हाथ किसी के ऊपर रख कर बोले, "यीशु के नाम में चंगे हो जाओ।"

कई बार जब हम प्रभु यीशु के गीतों को गातें है तब हम ये नही समझ पाते कि क्या उपदेश परमेश्वर हमें देना चाहता हैं। (देखें यूहन्ना १४:१२-१४) "में प्रभु यीशु मसीह", कहते है जब हम उसके नाम में प्रार्थना करते है। तब हम उस पिता के सामने प्रस्तुत करते है जो यीशु के द्वारा है। मैं पसन्द करती हूँ क्योंकि ये एक बहुमूल्य स्थान मुझे पाना है।

मैं ये नहीं प्रस्तुत करती कि मैं क्या हूँ और क्या थी और क्या होना चाहती हूँ, क्योंकि मैं गलतियाँ करती हूँ।

जब मैं प्रार्थना करती हूँ कि पिता मैं तेरे पास यीशु मसीह के नाम में आती हूँ और विश्वास से यीशु मसीह के लहू को अपने जीवन पर लगाती हूँ मैं चाहती हूँ कि आप मेरे सब गुनाहों को माफ कर दें। और मै उस नाम से आती हूँ जो हर नामों से ऊपर है। मैं अपने पिता को हर वो चीज़ जो उसके पुत्र

यीशु मसीह का है प्रस्तुत करती हूँ। मैं उसे याद दिलाती हूँ जो त्याग उसने मेरे लिये किया। वह इस संसार में एक बार सबके लिए आया। जिस से पाप की सामर्थ्य को हम से अलग कर दे। यह उस ने अपने बलिदान के द्वारा किया।

इब्रानियों ६:२३

हमारे लिये क्रूस पर मरा और फिर तीसरे दिन जी उठा।

मैं यीशु मसीह में अपने विश्वास को घोषित करती हूं ताकि मेरे पाप हमेशा के लिये चित पर ही न हो। जब मैं किसी आराधना में सेवा करती हूं मैं आशा करती हूं कि सामर्थ्य भरे कार्यो को होते देखूं। मैं अपने नाम के या इज़्जत पाने के लिये नहीं कर रही हूं।

मेरा कार्य सिर्फ इतना है कि विश्वास में खडे होकर उसके नाम को बोलना, मेरा कार्य है कि लोगों के लिये प्रार्थना करना और परमेश्वर पर उसके परिणाम को छोड़ देना। मैं चाहती हूं कि उसका नाम फैलाया जायें और उठाया जायें। मैं चाहती हूं कि लोग ये जाने कि प्रभु यीशु के नाम में कितनी सामर्थ्य हैं।

"अपने तरह से प्रार्थना करो अपने सारे दिन में"

पतरस और यूहन्ना संध्या को तीन बजे प्रार्थना के समय मंदिर में जा रहे थे। और लोग एक मनुष्य को जो जन्म से लंगड़ा था ले जा रहे थे, जिसे वे प्रतिदिन मंदिर के उस फाटक पर जो "सुन्दर" कहलाता है बैठा दिया करते थे कि वह मंदिर में प्रवेश करने वालों से भिक्षा मांगे। तब पतरस ने यूहन्ना के साथ उसे एक टक देखकर कहा, "हमारी ओर देख।" वह कुछ पाने कि आशा से उनकी ओर देखने लगा। तब पतरस ने कहा, "मेरे पास चांदी और सोना तो

नहीं है, परन्तु जो मेरे पास है वह तुझे देता हूं - यीशु मसीह नासरी के नाम से चल-फिर"।

प्रेरितों के काम ३:१-६

यदि हम यीशु मसीह के नाम में लोगों के लिये और अधिक प्रार्थना करें बजाये उनको जांचने के, तब हम उनके और अपने जीवन में और अधिक परिवर्तन देखेंगे क्योंकि लोगों को जांचने और उनकी बुराईयों को निकालने से अच्छा उनके लिये प्रार्थना करने में समय लगायें। मैं आपको एक उदाहरण देती हूं, मान लीजिये हम एक जवान व्यक्ति को सड़क पर जाता हुआ देख रहें है क्योंकि वो लडखडा रहा है तो हम अनुमान लगा सकते है कि वह नशा किये है या शाराब पिये है क्योंकि वह गन्दा और मैला कुचला है हम ये अनुमान कर सकते है कि उसके पास रहने के लिये घर भी नही हैं। कितनी बार हम एक ऐसे व्यक्ति को देखकर अपने आप से कहते है कि कितनी शर्म कि बात है कि कोई अपना जीवन इस प्रकार नष्ट करे इतना भयानक तरीका है जीने का मुझे विश्वास ही नही होता कि लोग किस तरह से इस दैन्य स्थिति में अपने आप को पहुंचा लेते है। जब कि उससे कहीं कम समय और ताकत यह कहने में लगती है कि पिता प्रभु यीशु मसीह के नाम उस व्यक्ति के लिये प्रार्थना करती हूं, मैं उस जवान के लिये प्रार्थना करती हूं कि उसके दुखो की परिस्थितियों मे से छुटकारा मिलें उसके जीवन में निपुण व श्रमशील रास्ते बने ताकि वो लोगों की सुनने और लोग उससे अच्छे शब्दों द्वारा बात कर सकें। परमेश्वर तेरा धन्यवाद हो कि इसी समय से उसके जीवन में कार्य होने लगे और वो फिर कभी भी भटके न।

जिस प्रकार पतरस और यूहन्ना ने कहा है कि हमें अपनी प्रार्थना को अपने तरीके से दिन भर में करना चाहिये और हमें अपनी उन बातों से छुटकारा

पाना है कि प्रार्थना सिर्फ एक शारीरिक आसन के रुप में या फिर घर के एक मुख्य स्थान में या चर्च में हो। ये सोचते हुये कि हमें जरुरत है एक व्याख्यान निपुण होकर या सार्थक शब्दों को विचारते हुए परमेश्वर के आगे आना है और फिर हम अपने विचारों को मज़बूत कर लेते है कि उस की हुयी प्रार्थना पर ज़रुर जय पा लेंगे और परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं को ज़रूर सुनेगा।

प्रार्थना सिर्फ परमेश्वर से बात करना है और हम ये प्रतिदिन कर सकते हैं, और पूरे दिन भी। पतरस और यूहन्ना के समान। हमें प्रभू यीशु के नाम में प्रार्थना करने की ज़रुरत है- उसके नाम में विश्वास के साथ। उसके नाम में प्रार्थना करना हमारे लिए एक विरासत, (जैसे परमेश्वर के पुत्र और पुत्रियों को) प्रभु यीशु के लहु के द्वारा एक अधिकार से प्राप्त है। यीशु मसीह के लहु में सामर्थ्य है जैसे कि उसके नाम में सामर्थ्य है।

"उसके लहु में सामर्थ्य हैं"

क्योंकि यदि अशुद्ध लोगों पर बकरों और बैलों का लहु तथा कलोर की राख का छिड़का जाना देह की अशुद्धता के लिए पवित्र करता है। तो मसीह का लहु जिसने अपने आप को सनातन आत्मा द्वारा परमेश्वर के सम्मुख निर्दोष चढ़ा दिया तुम्हारे विवेक को मरे हुए कामों से और भी अधिक क्यों न शुद्ध करेगा कि तुम जीवित परमेश्वर की सेवा करो ?

इब्रानियों ६:१३,१४

मुझे पंसद आता है गीत गाना और बात करना उस यीशु के नाम के विषय और उसके लहु के विषय। क्योंकि मैं दृढ़ता से विश्वास करती हूं कि यदि हम ऐसा करते हैं इमानदारी से, तो शैतान ज़रुर भागेगा। यदि हम एक

आश्यर्चकर्मो का वातावरण स्थापित करना चाहते हैं तो प्रार्थनायें शुरु कर दें। गीत गाना, प्रचार करना और यीशु मसीह के लहु को और उसके नाम को ऊँचा उठाना शुरु कर दें।

उसके लहु में इतनी सामर्थ्य है कि वो जीवन भर के पापों को धो डाले। सीखें उस परमेश्वर की सामर्थ्य को इस्तेमाल करना आपके लिए उपलब्ध है और उसके नाम को अपनी प्रार्थनाओं में और उसकी बड़ाई में इस्तेमाल करें न कि व्यर्थ में। सोचे हमारे पास क्या है। हमारे पास यीशु का नाम और लहू है। लहू हमें पूर्णतया हमारे पापों से शुद्ध करता है। हमारे पाप ऐसे साफ हो जाते है जैसे हम ने कभी पाप किया ही नहीं (१ यूहन्ना १:७) स्वर्ग और पृथ्वी की सारी सामर्थ्य यीशु के नाम में है और वह नाम हमें दिया गया है अब हम यीशु के लहू से धुल चूके हैं और अब हमें अगे बढ़ना है। उस निश्चयता के साथ कि जो हम यीशु के नाम से मांगते या बोलते है उस ने प्रतीज्ञा की है कि वह हमें देगा। क्योंकि उस के नाम में सामर्थ्य है, जैसे कि जो वह है वह हम प्रस्तुत करते है। अपने जीवन को सामर्थ्य हीन न बिताये परमेश्वर की सामर्थ्य प्रयोग करना सीखें। जो आप की उस के नाम के द्वारा प्रार्थना और प्रशंसा कर के प्राप्त हो सकता है - जो बेकार नही है।

“उसके नाम को व्यर्थ में न लेना”

उसके नाम को व्यर्थ में न लेना

तू अपने परमेश्वर यहोवा का नाम व्यर्थ न लेना क्योंकि जो यहोवा का नाम व्यर्थ लेता है, उसको यहोवा दण्ड दिये बिना नहीं छोड़ेगा।

निर्गमन २०:७

तुम्हें परमेश्वर अपने प्रभु के नाम को व्यर्थ में इस्तेमाल नहीं करना चाहिए न ही दोहराना चाहिए (यह कि हल्की तरह न हंसी में, न तो गलत रीति से उसके नाम की कसम खाना और न दूषित करना)

क्योंकि जो यहोवा का नाम व्यर्थ में ले उसको निर्दोष न ठहराया जायेगा। कई साल पहले मैंने इस विषय का प्रकाश पाया कि हमें व्यर्थ में परमेश्वर का नाम नहीं लेना चाहिए। उसी समय से मैंने हमेशा यह विचार किया कि परमेश्वर का नाम लेना उस प्रकार से है जैसे परमेश्वर के नाम को किसी शापित शब्द के साथ टोक देना या फिर किसी और दोषपूर्ण तरीके से इस्तेमाल करना, पर जब मैंने इस पद को पढ़ा जो बताती है जो हंसी में हल्के रुप में उसके नाम का इस्तेमाल करते हैं तो प्रभु उन्हें कभी भी निर्दोष नहीं ठहरायेगा। तब परमेश्वर ने मुझे दिखाया कि कई बार हम व्यर्थ इस्तेमाल करते है।

हम "परमेश्वर" शब्द को कई प्रकार से इस्तेमाल करते है।

"सकारात्मक और नकारात्मक को मिलाना"

क्या सोते के एक मुंह से मीठा और खारा जल निकलता है ?

याकूब ६:११

मैं एक कारण से विश्वास करती हूं कि हम सामर्थ्य को क्यों नहीं उतरते देख पाते उस परमेश्वर के नाम में क्योंकि हम अपने प्रचार में सकारात्मक और नकारात्मक को मिला देते है। जब हम ऐसा करते है तब उसका परिणाम शून्य हो जाता है।

जब हम बन्धनों को तोड़ना चाहते है तब हम परमेश्वर के नाम को सकारात्मक रुप में नहीं लेते। मुड़कर चारों तरफ उसके नाम को नकारात्मक रुप से लेते हुए और ये समझते हुए कि अभी भी उसकी सामर्थ्य आपके पास है।

उन स्थितियों परमेश्वर ने मुझसे बोला (न तो उस सुनने वाली आवाज़ के द्वारा पर मेरी आत्मा के द्वारा), उसने कहा - "कि कुछ लोग कहीं पर भी नहीं पहुंच पाते क्योंकि कुछ दिन वो नकारात्मक रहते हैं तो कुछ दिन उसी वस्तु के लिए सकारात्मक हो जाते हैं। जब हम प्रार्थना करते है उन शब्दों से उन पक्तियों को स्वीकारते हैं। तब फरिश्ते हमारे लिए उस कार्य को करते है।" (देखें भजन संहिता १०३:२० और इब्रानियों १-१४)

जब लोग ऐसी कुछ चीजें बोलते, "ओह मेरे प्रभु मैं कितनी थक गई," वो प्रार्थना नहीं करते वे सिर्फ अपनी इच्छा को एक मुहावरे के रुप में दर्शाते हैं। अब अच्छा है कहना, "ओह मेरे प्रभु मैं कितना थक गई हूं।"

जब हम सच्चाई से अपने हृदय को प्रभु कि ओर उठाते है सत्यवादी कि तरह उस स्थिति में रहते हुये, पर कई समय हम ऐसे नहीं करते होते। बिना उसके सोचे विचारे हम परमेश्वर के नाम को बल्कि इस तरह से या मज़ाक के तौर पर लेते हैं, हमने जैसा कि देखा है कि परमेश्वर ने अपने शब्दों में साफ किया है कि जो कोई ऐसा करता है वह निर्दोष न ठहराया जायेगा इस कारण हमें सचेत रहना है इस बात के लिये कि हम उसके नाम को कैसे इस्तेमाल करते है।

जहां कहीं मैं जाती हूं मैं सुनती हूं, विश्वासियों से, इस प्रकार कहते हुये "ओह। प्रभु" या प्रिय परमेश्वर जबकी वो उसको नही सम्बोधित करते है। उस प्रकार से प्रभु के नाम को लेना उनकी एक आदत बन चुकी है।

इस कथन को कहना उनकी एक आदत बन चुकी है जैसे - "परमेश्वर आज कितनी गरमी हैं।" मेरे परमेश्वर सब्ज़ियों के दाम कितने बढ़ गये है। "परमेश्वर आज कितनी ठड़ है, अच्छे प्रभु मैं कितनी भूखी हूं और शायद मरने वाली हूं।"

जब मैं प्रचारको के साथ होती हूं तब भी मैं इन भाषाओं को सुनती हूं, आराधना करने वालों से, अगुवों और धर्मप्रचारकों से और आदि।

सच कहा जाये तो मैं ये इतना सुनती हूं कि कोई समय ही नही होता कि मैं उनको सुधारु पर वो हमेशा करते है पर यह मुझे दुःख पहुचाता है मुझे पता है कि वे अपने आप को नुकसान पहुंचाते है जब वे ऐसा करते है।

प्रभु ने मुझे दिखाया कि बहुत से लोग जो मसीह का बदन है उन्हें इस क्षेत्र में एक नाटकीय रुप में बदलने की आवश्यकता है।

"उसके नाम का आदर"

अतःजब हमें ऐसा राज्य मिलने पर है जो अटल है तो आओ, हम कृतज्ञ होकर आदर और भय सहित परमेश्वर की ऐसी उपासना करें जो उसे ग्रहणयोग्य हो,

इब्रानियों १२:२८

मैं ऐसे कार्यक्रम या पिक्चर को टेलीविज़न पर देखना पंसद नही करती जिसमें प्रभु का नाम व्यर्थ में लिया जाता हो। ये मायने नही रखता कि कौन सा कार्यक्रम है और कितना मैं और मेरा परिवार उसको देखना चाहता हो, यदि उसमें प्रभु का नाम व्यर्थ ने लिया जाता है। तो उसको बन्द कर दिया जाता है।

क्यों ? क्योंकि वो आदर के योग्य नहीं होते। मैं प्रभु से इतना अधिक प्रेम करती हूं बजाये किसी और का नाम प्रयोग करने के सिर्फ उसने मेरे लिये बहुत किया। मैं सच्चाई से विश्वास करती हूं कि यदि हम चाहते है कि परमेश्वर का नाम हमारे जीवन में उडेला जाये जब हमें उसकी आवश्याकता हो, तब हम उस नाम को आदर दें बाकी के समय में हम में से बहुतो के पास आज ये उपाय नही है जो आदर परमेश्वर के नाम के लिये पुराने नियम के लोगों के पास था।

उसके लिए उनमें ऐसा आदरपूर्ण भय था कि वो उसे बोलते तक नहीं थे। कई बार सिर्फ "उसके नाम" से ही सम्बोधित करते थे क्योंकि उन्हें उस सामर्थ्य के विषय पता था जो उसके नाम में थी। दाऊद पुराने वाचा से सहमत रहता था जब उसने गोलियत से सामना किया था, पलिश्ती उस के सक्षम दानव से (इस्त्रालियों का दुश्मन) जिसने अपने परमेश्वर से श्राप दिलवाया और धमकी दिलवायी कि वह उसका..... मांस आकाश के पक्षियों और मैदान के वन - पशुओं को दूंगा।

(१शैमूएल १८:४३-४४)

दाऊद बड़ी दुविधा की स्थिति में पड़ गया परन्तु उसने अपने दुश्मनों को यह धमकी देते हुए घोषित किया,

तब दाऊद ने पलिश्ती से कहा, "तू तो मेरे पास तलवार, भाला और बर्छी लेकर आया है, परन्तु में सेनाओं के यहोवा, इस्त्राएल की सेना के परमेश्वर के नाम से तेरे पास आया हूं जिसको तू ने ललकारा है"

(१ शैमूएल १७:४५)

तब दाऊद ने कहा, "तेरा सिर तेरे धड से अगल कर दूंगा।"

(पद ४३)

जब दाऊद उस सक्षम दानव से युद्ध करने के लिये बाहर आया, उसने कुछ नहीं किया सिवाय गोफन के और प्रभु के नाम के। पर वह कहीं अधिक सामर्थी था अपने उस पीतल के बने उस गोफन से दुश्मन को परास्त करने के लिये। और यही हमें और आप को भी करना है उस विरोधी आत्मिक दुश्मन को मारने के लिये तो है शैतान । हमें उन आत्मिक हथियारों का प्रयोग करना है, और जैसा कि हमने देखा है, उनमें से एक हथियार है उसका नाम, अन्धकार को बेधने वाले उस यीशु का नाम।

"समस्याओं के समय आत्मा की सहायता लें"

क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध मांस और लहु से नहीं वरन प्रधानों, अधिकारियों, अन्धकार की सांसारिक शक्तियों तथा दुष्टता की उन आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में है।

इफिसियों ६:१२

जब कोई हमें क्रोधित करता या निराश करता, ये कुछ अच्छा नहीं कि किसी को भी व्यक्तिगत रुप से जांचे या दोष लगायें परन्तु प्रभु यीशु मसीह के नाम से उससे व्यवहार करना है और उस आत्मा से जो उसके पीछे है और उसके

द्वारा कार्य करती है। कई बार ऐसे समय जैसे गोल्फ के मैदान पर। जब मैं लोगों के बीच में होती हूं तो सदैव मैने उन्हे कोसते हुए पाया उस समय मैंने सीखा, कहती हूं यीशु के नाम में कोसने वाली दुष्ट आत्मा मैं तुझ पर यीशु के नाम मे अधिकार लेती हूं तू अपने मुहं को बन्द कर। मैं दिन भर यह सुनना नहीं चाहती। एक दूसरे समय में सुनती लोगों को दोष लगाते हुऐ बड़बड़ाते हुये, कुड़कुड़ाते हुये और कमिया ढूँढ़ते हुये - और उनके साथ मुझे पूरा दिन व्यतीत करना पडता। पिता मैं इस दैव्य आत्मा पर अधिकार लेती हूं और यीशु मसीह के नाम में इसको बान्धती हूं, और मैं इसे दिन भर सुनाना नहीं चाहती।

(देखें मत्ती १८:१८) कई बार लोग मुझसे पूछते क्या आपकी हर बार तुरन्त उत्तर मिल जाता है ? मेरा उत्तर होता है, नहीं। लोगों के पास अपनी एक इच्छा है और वह मेरी प्रार्थनाओं का इन्कार करते हुये उसको दौहराह सकते है लेकिन मैं अपने खुद के जीवन में ये सीख रही हूं इससे पहले कि कोई दूसरा कार्य करें पहले प्रार्थना करें। प्रार्थना करना एक साकारात्मक शाक्ति है। समस्याओं को सुलझाने की। यदि मुझे किसी व्यक्ति विशेष से सीधे कहने की आवश्यकता है तो मैं जरुर कहुंगी परन्तु मैं हमेशा यह चाहूंगी कि इस प्रकार कि परिस्थितियों को पवित्रआत्मा ही अगुवाई करें। मुख्य बात यह है कि हमें ज्यादा प्रार्थना करने की आवश्यकता है। उन लोगों के लिये जिनसे हम प्रतिदिन मिलते जुलते है। हमें ये याद रखने की आवश्यकता है कि प्रभु यीशु के नाम में सामर्थ्य है।

"यह नाम कोई मजाक नहीं"

और न निर्लज्जता, न मूढ़ता की बातचीत की, न ठट्ठे की क्योंकि ये बातें सोहती नहीं, वरन धन्यवाद ही सुना जाए।

इफिसियों ५:४

दूसरी चीज जिसको मैंने आदत डाली जिसके लिए परमेश्वर ने मुझे सज़ा दी, वह था इसके नाम का व्यर्थ में इस्तेमाल करना था मूर्खतापूर्ण बातों में इस्तेमाल करना। उदाहरण के तौर पर एक रात हमारा पुत्र ठीक खाने के वक्त आया मैनें बहुत स्वादिष्ट भोजन मेज़ पर सजाया हुआ था और वह सिर्फ बोलता जा रहा था। कई विषय के ऊपर जिसमें में पङना नही चाहती हुं। जब मैंने देखा कि उसे जाने कि जल्दी नहीं तब मैंने हंसी में उससे कहा यीशु के नाम में दूर हो जा जैसे ही मैनें ऐसा किया मेरे अन्दर भारी दोषानुभूति उत्पन्न हो गयी क्योंकि परमेश्वर मुझे इसी क्षेत्र में सिखा रहा था। मैं ऐसे ही लोगों को बहुत बार कहते सुनती हूं परन्तु हमें सावधान रहने की आवश्यकता है कि हम उसके नाम को मजाक में न प्रयोग करें। मैं एक बार एक सामर्थी मसीही मध्यस्थता की प्रार्थना करने वाले के साथ दिन का भोजन करने गई, जो हमेशा वचन को बाँटता मैने उसे एक घंटे में पांच बार प्रभु के नाम को व्यर्थ में लेते सुना (हल्के पन से और बेवकूफी तौर से) बहुत बार विश्वासी ऐसा करते है बिना ये महसूस किये कि वो क्या कर रहें है। जब आप परमेश्वर के नाम का प्रयोग करते है तो इस बात का यकीन रखें कि आप विश्वासयोग्य है यदि आप बुरी आदतों की वजह से गलती करते है। यदि आप अपने आप को गलत रीति से उस नाम का प्रयोग करते और सुनते है तो उसी समय रुकिये और पश्चाताप कीजिए। परमेश्वर से कहिये कि वो आपको क्षमा कर दें उसके नाम को व्यर्थ मे लेने के लिये। परन्तु इन बातों को महसूस कीजिए। कि आप अपने आप को चोंट पहुंचा रहें है उसके नाम का गलत रीति से प्रयोग करके। यदि आप चाहते है कि उसके नाम की सामर्थ्य आप के जीवन पर उडेली जाये जब आप को आवश्यकता हो, तब आपको बाकी के समय में उसके नाम को आदर देना होगा।

सामर्थ्य उसी क्षण आपके लिये उपलब्ध हो जाती है जब आप विश्वास करके उसका नाम पुकारते हैं सामर्थ्य उन सारी शैतानी शक्ति और उसकी सेना के खिलाफ में इस्तेमाल में लाने के लिये, सामर्थ हमारी सहायता के लिये, सामर्थ्य दूसरों को आशीष देने के लिये। मैं उस रिसने वाली सामर्थ्य की बात नहीं कर रही परन्तु वो महान धारा से बहने वाली परमेश्वर को उतारकर हमारे मध्य कब्जा कर सकती है। इसकी एक ही कुंजी है उस सामर्थ्य की वो है उस तेजस्वी नाम को बोलना - "यीशु" आदर और सम्मान के साथ।

“आदर और सम्मान”

"आदर और सम्मान"

उसके नाम का अमतमदबम। दक त्मचमबज थ्वत जीम छंउम.

"परन्तु जिसे छली के झुण्ड में नर पशु हो और वह जिसकी मन्नत मानकर भी दोषापूर्ण पशु की बलि प्रभु के लिये चढ़ाए, वह शापित हो। क्योंकि मैं तो महाराजा हूं, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है, और मेरा गम अन्य जातियों में भय योग्य हैं।"

मलाकी १:१४

अब जब आप इस पुस्तक के बिन्दु तक पहुंच चुके है, मैं यकीन करती हूं कि आपने ये अनुभव किया होगा कि प्रभु यीशु का नाम उन सब साधारण नामों से उत्तम हैं। इस पद में प्रभु यीशु ने खुद सचेत किया है कि उसके नाम को आदरपूर्ण भय से लें।

इस शब्द "भय" के मायने यहां दिखाया गया है कि आदर, भरा भरोसा प्रेम और आज्ञाकारिता से उसकी तरफ हो, यहोवा का भय मानना बुद्धि का प्रारम्भ है मूर्ख ही बुद्धि तथा शिक्षा को तुच्छ समझते हैं।

नीति वचन १:७

हमें बाताया गया है यदि आप सच्चाई को जानना चाहते है मैं सोचती हूं आज बहुत से मसीहियों ने अपने सम्मान को दुसरी चीजों में खो दिया है।

जब हम यह सीखते है कि प्रभु हमारा मित्र है तब हम बहुत ही आरामदायक रिश्तों में उसके करीब आ जाते है। पर कई बार वो मेरे हृदय से बात करता है कि हमें खबरदार होना है कि वो "कोई ऐसा जन है" और ये

सोचते हुये सिर्फ "कोई" है सिवाये जाने हुये कि वो महान और आदर के योग्य है।

"आदर उत्तेजित करता है आज्ञाकारिता को"

हे बालकों प्रभु में अपने माता पिता की आज्ञा मानों, क्योंकि यह उचित है। अपने माता पिता का आदर कर - यह पहली आज्ञा है जिसके साथ प्रतिज्ञा भी है।

इफिसियों ६:१-२

मैं विश्वास करती हूं यदि हम आदर प्रगट करने वाले हो जायें तो हम और अधिक आज्ञाकारी हो जायेगें। जब बच्चे आदरपूर्ण और आदर प्रगट करने वाले होने वाले हो जाते है अपने माता के प्रति तो वे उन्हें बहस नहीं करते और न उनका विरोध करते है।

मैं इस निष्कर्ष पर विश्वास करती हूं कि क्यों बहुत से बच्चे अपने माता पिता का आदर सम्मान नही करते जैसा उन्हें करना चाहिये क्योंकि उन माता और पिताओं ने तो आदर सम्मान उन आत्मिक चीजों के प्रति और आत्मिक अगुवों के प्रति खो दिया हैं, और अपने अधिकारों को बेकार की बातों में लगा दिया है और इस प्रकार वो आदर और सम्मान बच्चों और माताओं - पिताओं के बीच से खत्म हो गयी है और इसलिये वे विद्रोह करते और बहस करते हैं। यदि माता पिता खुल कर अपने साथ काम करने वालों का निरादर करते है तो वह अपने बच्चों को निरादर करने की गलत शिक्षा देते है।

यह बहुत ही साधारण सी बात है यदि आप देखें किसी भी स्थान जैसे दुकान पर और देखें किसी दो साल के बच्चे को किस प्रकार वो किसी वस्तु

को पाने की जिद् करता और अपना क्रोध प्रगट करता और या अपनी मां को पैन से मारता है। यदि हम अभी इन चीजों पर नही गौर करते तो हमारे बच्चे आखिर में हमारे प्रति और उस आसमानी बाप के प्रति इसी प्रकार का व्यवहार करते पाये जाते है। दूसरे शब्दों में वो आदर और सम्मान हमारे प्रति प्रभु के प्रति और सब के साथ भी जो कुछ उनके अधिकार में है। यह हम सब को समझना चाहिये कि शैतान यही सब करवाना चाहता हैं। वह दुनिया में इस प्रकार की कोशिशें करता है जैसे निरादर करना और लज्जित करना। यकीन रखिये कि वह चर्चो में भी चुपके से अपना रास्ता बना लेता है क्योंकि उसे मालूम है कि उसके ऐसा करने से हम अनाज्ञाकारी बन जाते है। आज्ञा का उल्लघंन करने से हम परमेश्वर की उस सामर्थ्य को अपने जीवन में से खो देते है। हमें एक बात की चौकसी करनी है कि हम उसकी सामर्थ्य पा लें।

"प्रचलित होने से आदर - सम्मान"

जब वे नाकोन के खलिहान तक आए, तब उज्जा ने अपने हाथ परमेश्वर के सन्दूंक की ओर बढ़ाकर उसे थाम लिया, क्योंकि बैलों ने ठोकर खाई। तब यहोवा का कोप उज्जा पर भड़क उठा और परमेश्वर ने उसके दोष के कारण उसको वहां ऐसा मारा, कि वह वहां परमेश्वर के सन्दूक के पास मर गया।

२शमूएल ६:६,७

पुराने नियम के इस अध्याय में हम देखते है कि दाऊद और उसके लोग उस वाचा के सन्दूक को वापस लें कर आ रहे है तो जैसे ही वे नाकोन के खलिहान तक आए बैलों के ठोकर खाने से हिलने लगा। उज्जा जो एक जवान लङका जो कि उस कार्ट को चला रहा था बढ़कर उसको थामने के

लिये लपका और सन्दूक को थामा और.... परमेश्वर ने उसके दोष के कारण उसको वहां ऐसा मारा, कि वह वहां परमेश्वर के सन्दूक के पास मर गया।

पत ७

हम अधयाय ३ और ४ में पढ़ सकते है कि परमेश्वर ने मूसा को एक विशेष रुप से चिताया है कि किस प्रकार इस सन्दुक को थामा जायें, और आगे तक बढ़ाया जायें छदं/पद्य ८ दाऊद के लिए कहता हैं कि दाऊद उस सन्दूक के कारण उज्जा कि हुयी मृत्यु के दुःख और पीडा से भर जाता है। वह यह नहीं समझ पा रहा था कि उज्जा सिर्फ़ सन्दूक को छूते ही क्यों मर गया।

१ शमूएल ७ में हम पढ़ते है कि जब वो सन्दूक पहले इस्त्राएल वापस लाया गया था फिलिप्पियों के द्वारा, तब वो अबीनादाब के घर पर रखा गया था, उज्जा के पिता के, कई सालों तक। मैं विश्वास करती हूं क्योंकि सन्दूक वहां इतने दिनों तक वहां रहने के कारण उज्जा के लिए वह एक साधारण सा स्थान हो गया था इसलिए वह उसको उस सम्मान से नहीं देखता था इस कारण उसे जरा भी भय नहीं था कि उसे नही छूना है। उस सन्दूक के प्रचलित होने के कारण उसके अन्दर उसके प्रति वो सम्मान नही था और इस कारण उसे अपनी जान गवानी पडी।

"समानता सामर्थ्य में कमी लाती हैं"

और उस ने उन के अविश्वास पर आश्चर्य किया और चारों ओर के गावों में उपदेश करता फिरा॥

मरकुस ६:४-६,

हमें चौकस रहना है कि हम चीजों के प्रति समानता न रखें क्योंकि एक

बार यदि हम उनके प्रति समानता रखने लगते है तब हम उसके प्रति वो इज्जत नहीं रख पाते जैसे कि हमें रखनी चाहिये।

यही सत्य प्रचलित लोगों के प्रति भी है। मैं जानती हूं कि बहुत से लोग ये नहीं समझ पाते कि जो आत्मिक अगुवे होते हैं वे क्यों नही दोस्त या साथी बन पाते है। कभी - कभी कुछ लोग अपने आत्मिक लोगों को इतने अच्छे से नहीं जान पाते और न ही लम्बे समय तक उनको उस स्थान पर देख पाते जिस पर कि उन्हें होना चाहिये। यह मनुष्य का स्वभाव है कि वह इच्छा अनुसार इस्तेमाल करने की वस्तुओं का मूल्य घटा देतें है।

मरकुस के छटे अध्याय में जब याशु मसीह अपने नाज़रत शहर में गया उन यहूदी लोगों के आराधनालयों में धार्मिक उपदेश देने के लिये गया तो कई बार लोगों ने उन पर अपना क्रोध जताया उन्होंने उसको मरियम का पुत्र कह कर पहचान करायी वे उसके भाई और बहन को जानते थे और उनमें उसकी समानता के कारण निरादर उसके प्रति उत्पन्न हो गया। परिणामस्वरुप जो उसकी सामर्थ्य उनको मदत करने के लिये थी वह कम हो गयी इस कारण वह बहुत कम लोगों को चंगा कर पाया।

कभी-कभी एक पुरोहित अपनी कलिसिया के किसी व्यक्ति के लिए प्रार्थना करता जाता है किन्तु कोई भी ऐसी अच्छी घटना उसके जीवन में नहीं घट पाती। परन्तु यदि कोई धार्मिक शिक्षक उस चर्च में आता और उसी व्यक्ति के लिये प्रार्थना करें तो वहीं व्यक्ति तुरन्त चंगाई को पा लेता है।

ऐसा क्यों हैं? क्या एक धर्म प्रचारक ज़्यादा अभिषिक्त और सामर्थी है पुरोहित से, नहीं, कारण यह है कि एक बीमार व्यक्ति उस धर्मप्रचारक को

भिन्न प्रकार से देखता है और उस प्रकार से अपने पुरोहित को नही देखता। वह अपने पुरोहित को हर हफ्ते देखता है और इसलिये वह एक पुराना पुरोहित बन जाता है। "सभी उससे प्रेम करते है और उसे समझते भी है वह एक महान प्रसन्नचित जन है। परन्तु वे वैसा विश्वास उस पर नहीं करते जितना कि जिनको वे नहीं जानते उन पर करते है। शायद इस कारण से भी कि उन्होंने उसे पहले कभी एक व्यक्तिगत रुप में देखा हो और थोड़ा क्रोधी पुरुष के सामान। इसलिए अचानक से वह इस बात को नहीं ग्रहण कर पाते कि वह एक हमेशा नियमित व्यक्ति है जैसा वो सब है।"

परन्तु वे लोग यह नहीं देख पाते कि वही सब चीजें वह व्यक्ति भी करता है चर्च आने से पहले।

"समानता आदर को कम करती है"

क्या यह वही बढ़ई नहीं, जो मरियम का पुत्र, और याकूब और युसुफ योसेस और यहूदा और शमौन का भाई हैं? और क्या उस की बहिनें यहां हमारे बीच में नहीं रहती? इसलिये उन्होंने उसके विषय में ठोकर खाई।

मरकुस ६:३

कई बार जब कोई व्यक्ति बच जाता है और जब अपने जीवन पर परमेश्वर की आवाज़ को सुनता है तब उसके परिवार के सदस्य और रिश्तेदार उस पुकार को नही ग्रहण कर पाते। क्या आप जानते है ऐसा क्यों है कारण यह है कि वह उससे बहुत ज्यादा परिचित है कि वो आदर जो उसे होना चाहिए वे नहीं पाते।

जैसा कि हमने उस लेखंश में देखा यह किसी के साथ भी हो सकता है

बाइबिल बताती है कि उसके अपने भाई उस पर विश्वास नही करते यूहन्ना ७:५

मेरे पास अभी कुछ ऐसे रिश्तेदार है जो मेरे प्रचार को नहीं मानते जैसा कि दूसरे करते है। कई बार लोगों ने मुझे बताया कि "तुम ज़रुर एक गर्म जोशीली हो परन्तु हम तुम्हे अच्छे से जानते है जब तुम....."

कई बार कुछ लोग हमारे बीते हुए समय को नहीं भूल पाते। परन्तु बाईबिल बताती है कि जब कोई यीशु मसीह में है, वह एक नयी सृष्टि है, पुरानी बातें जाती रही और देखो सब नई हो गयी

२ कुरिन्थयों ५:१७

हम बहुत ज्यादा प्रभु यीशु के नाम से परिचित होना नही चाहते और इस कारण बिना विचारों इधर-उधर छोड़ देते ये जाने बिना कि उससे कहीं ज़्यादा उसके नाम को बोलने में है। मुझे आपके विषय तो नहीं मालूम परन्तु जब मैं उस नाम को बोलती हूँ "यीशु" मैं सचमुच उस अभिषेक को महसूस करती हूँ अपने ऊपर जब मैं अपनी सभाओं में बोलती हूं लोग बच जाते हैं, चंगाई पाते है और पवित्र अत्मा से भर जाते है।

इस प्रकार के परिणाम हर किसी की सभाओं में नही हो पाते। इसलिये मेरे दिल की गहरायी से ये इच्छा है कि हर एक विश्वासी उस तेजस्वी नाम के प्रति आदर और सम्मान को रखें। जब हम ऐसा करते है तब हम अपने आप को उस सामर्थी नाम के योग्य पाते है - वो सामर्थ्य अपनी परिस्थितियों से निकलने की, अद्भुत शक्ति से दूसरे को प्रचार करने की।

“नाम और सम्बन्ध”

"नाम और सम्बन्ध"

और मनुष्य के रुप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली। इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया। और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है। कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे है, वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें। और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है॥

फिलिप्पियों २:८-११

कैसे यीशु मसीह ने इस नाम को पाया जिसके विषय हम बात कर रहे थे और जिसका वर्णन सामर्थी रुप से इस भाग में किया गया है। वह नाम जो कि प्रकाशित है उस प्रभु के नाम के साथ शब्द उद्धारकर्ता (यूहन्ना १:१), परमेश्वर का मेमना (यूहन्ना १:२१) जीवन कि रोटी (यूहन्ना ६:३५) प्रभुओं का प्रभु और राजाओं का राजा?

(प्रकाशितवाक्य १७:१४)

उसे यह इसलिये प्राप्त हुआ कि वह आखरी वक्त तक आज्ञाकारी रहा। हम पहले ही आज्ञाकारिता के विषय बात कर चुके है, परन्तु यहां एक और विचार भी है उस नाम के साथ जो मैं आपको अब महसूस कराना चाहती हूं।

"आज्ञाकारिता और सम्बन्ध"

जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो। जिसने परमेश्वर के स्वरुप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश

में रखने की वस्तु न समझा। वरन् अपने आपको ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरुप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया।

फिलिप्पियों २:५-७

इस भाग में यीशु मसीह से पहले प्रेरितों की आज्ञाकारिता का वर्णन किया है फिलिप्पियों २:८-११ में इस अध्याय के शुरु में वह अपने पिता के अधीन रह कर और उसके अनुसार चला।

यदि यीशु मसीह का नाम हमारे जीवन में एक सामर्थ्य पूर्ण परिणाम ला सकता है, तो हम सबसे पहले उससे रिश्ता जोडे जैसा कि स्वर्ग में उसका उसके पिता के साथ था। किसी के साथ सम्बन्ध स्थापित करने के लिये उसके साथ समय बिताने की आवश्यकता है। प्रभु से अधिक सम्बन्ध स्थापित करने के लिये हमें हर रोज समय बिताना और संगति रखना पडेगा। साधारण सी बात उससे प्रतिदिन बात करना, हर रोज उसके वचन को पढ़ना और अपने जीवन में उसका दखल होने देना। बिना किसी समर्पण के आपका एक सच्चा सम्बन्ध उससे स्थापित नही हो सका। वैसा ही समर्पण जैसा एक विवाह के समय किया जाता है। उसके नाम को इस्तेमाल करने के लिये हमें जरुरी है "शादी".

जिसकी दुल्हन है, वही दुल्हा है, परन्तु दुल्हा का मित्र जो खडा हुआ उस की सुनता है, दुल्हा के शब्द से बहुत हर्षित होता है, अब मेरा यह हर्ष पूरा हुआ है।

यूहन्ना ३:२६

बाईबिल में, प्रभु यीशु मसीह ने अपने आपको एक दुल्हे के रुप में और चर्च को एक दुल्हन के रुप में दर्शाया है। यदि शादी होनी है तो दुल्हे और दुल्हन का होना जरुरी है। एक विवाह अन्तिम समय तक के लिये एक दुल्हा

और दुल्हन के मध्य बनता है।

जब मेरा और देव मेयर के साथ का विवाह हुआ, मैंने उसका नाम पा लिया और श्रीमती देव मेयर बन गयी। और अब मेरे पास हर वो अधिकार है जो देव मेयर का नाम दर्शाता है। हमारे विवाह के पहले मेरे पास कुछ भी नही था। मेरे पास एक नयी कार हो गयी उसी क्षण जब हम पति पत्नी बन गये और वह कार मेरी हो गयी। हमारे विवाह के पहले मेरे ऊपर भारी कर्ज़े थे लेकिन जिस क्षण हमारा विवाह हो गया सारे कर्ज़े देव के हो गये। हर वह चीज़ जो हमारी व्यक्तिगत थी अब एक दूसरे की हो गयी क्योंकि हम एक दूसरे के साथ विवाहित बन्धन में बन्ध गये। ऐसा तब नही था जब हम एक दूसरे के साथ और वो कोई भी चीज जो नाम दर्शाती थी जब तक हमारा विवाह नही हो गया। इस तरह यीशु के साथ भी होना है हमें उसका नाम नहीं मिलता और न ही उसकी सामर्थ्य जो उसमें है जब तक कि हमारा विवाह उसके साथ नहीं हो जाता। समस्या यह है कि ज्यादातर मसीही लोग बस मिलना जुलना पसंद करते है। वो अपना जीवन अपनी तरह से जीना चाहते हैं, स्वतन्त्रता से वो अपना सब कुछ नही देना चाहते, वो अपने जीवन के कुछ भागों को अपने में ही पकडे रहना चाहते है। वो पूरी तरह से समर्पित होना नहीं चाहते जबकि वे किसी समस्या या विपत्ति में पडते है तब "हे यीशु मैं परेशानी में हूं, मैं तुमसे मिलना चाहता हूं। और। यीशु मुझे कुछ पैसों की आवश्यकता है, मैं तुमसे मिलना चाहता हूं, और। यीशु में बीमार हूं मैं तुमसे मिलना चाहता हूं वे इसी कारण उस नाम को पुकारते है या उन्हें पैसा मिल जाये या छुटकारा मिल जाये लेकिन वे पूरी तरह से और पूरे समय के लिये उसके नही बनना चाहते यीशु उस बात में रुचि नहीं रखता कि उससे हमारा मेल मिलाप क्षणिक भर का हो परन्तु वो हमसे हमेशा का रिश्ता चाहता है वो हमारी ऊँगली में रिश्ते के छल्ले

को पहिना कर हमसे विवाह करना चाहता है कि उसे हम पति के रुप में अपनायें। हमारे एकलौते प्रभु और मालिक के रुप में"

यशायाह ५४:५ देखें

समस्या यह है कि कई बार हम लोग इस प्रकार कि वाचा नहीं बान्धना चाहते। हम उसके नाम का प्रयोग करना चाहते है लेकिन हमें यह अनुभव करना है कि हम उसके नाम को तब तक प्रयोग न करें जब तक उसके साथ हमारा विवाह या एक गहरा बन्धन न जुड़ जाये। मुझे अपने साथ अपने पति के नाम का प्रयोग करने कि अनुमति नहीं थी जब तक कि मेरा विवाह उसके साथ नही हो गया। जब तक हम लोग केवल मिलते-जुलते थे हम उसके नाम का न हस्ताक्षर कर सकते थे और न ही उसके खाते से पैसे निकाल सकते थे। परन्तु जिस पल हमारा विवाह हुआ मैं उसके खाते से पैसा प्राप्त करने लगी क्योंकि जो कुछ उसका था वो मेरा था और जो मेरा था वह उसका। प्रभु यीशु मसीह ने काफी समय पहले मुझे बताया (आवाज़ के जरिये नही परन्तु मेरे हृदय में, यदि तुम मुझे अपनी हर वस्तु दे दोगे जो तुम्हारे पास है तो मैं तुम्हें हर वो वस्तु दूगां जो मेरे पास है। परन्तु तुम्हें मेरा बनने की आवश्यकता है। दूसरे शब्दों में वह चाहता है कि हम अपना पूरा ध्यान उसकी ओर कर लें, पूरी तरह से उसके पीछे हो लें, अपनी हर वो वस्तु उसे दे दें। क्यों? उसके साथ सम्बन्ध होने से ही सामर्थ्य आती है पूरी तरह से उसका बनने पर)।

सम्बन्ध रखना सामर्थ्य लाता है

परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उस ने उन्हें, परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं।

यूहन्ना १:१२

मेरे जीवन में एक क्षमता है और वो हर समय बढ़ती है कि मैं परमेश्वर की हूं मेरा अभिप्राय क्या है, मैं अपनी नही हूं मैं जो चाहूं, या जैसा चाहूं या जैसा खर्च करना चाहूं, या जैसा चाहूं किसी के साथ व्यवहार कर लूं, जैसा चाहूं में अपने जीवन को व्यतीत करुं इन सब की अनुमति जब परमेश्वर चाहता है तब मैं करती हूं।

मैं उससे हर एक छोटी से छोटी वस्तुओं के लिए उसकी इच्छा जानने के लिये उसके पास नही जाती किन्तु इससे पहले कि मैं कुछ करुँ मुझे विश्वास है हमारी सहायक पवित्रआत्मा हमारी अगुवाई करती है। अपने जीवन के हर दिन की दिनचर्या में और उन सभी भारी स्थितियों में भी जो कभी-कभी आ जाती है, परन्तु जैसे ही मुझे परमेश्वर से यह संकेत मिलता है कि मैं जो कुछ भी करने जा रही हूं वह गलत है मैं तुरन्त अपने आप को रोक लेती हूं मैं ऐसा क्यों करती हूं? क्योंकि मुझे आदरपूर्ण भय होता है कि मैं परमेश्वर की उपस्थिति को न खो दूं। हां, मैं डरती हूं और डरती हूं, सही मायने से।

मैं परमेश्वर से नहीं डरती परन्तु इस बात से डरती हूं कि मुझे हजारों लोगों के सामने उस वचन को और प्रभु की सामर्थ्य को लाना है जो कि मेरा प्रतीक्षा कर रहे है। और मेरे पास से उस परमेश्वर की मौजूदगी और अभिषेक मेरे जीवन से खो न जोयें। यह भय देने वाला है और ऐसा ही होना चाहिये। यह मुझे प्रार्थना करने और आज्ञकारिता में दृढ़ बनाता है। ये मुझे टी.वी. बन्द करने देता जब मैं प्रभु के नाम को व्यर्थ में लेते हुए देखती और सुनती हूं।

मैंने प्रभु से एक वाचा बान्धी मैं उसकी हूं और परिणाम स्वरुप मैंने अनुभव किया उसकी सामर्थ्य को समय - समय पर जब मैं ने उसके नाम से प्रार्थना की, यह चौकाने वाली बात है कि बहुत से मसीही प्रभु से वाचा को

नहीं बान्धते और न ही उसकी सामर्थ्य को अपने जीवन में अनुभव करते। वे नही समझ पाते कि सम्बन्ध रखने से सामर्थ्य आती है। मैं एक कारण देती हूं क्यों वे वाचा नहीं बान्धना चाहते वो यह कि शब्द "वाचा" उन्हें कष्टदायक बना देता है। वो समझते है कि उन्हें कुछ देना पड़ेगा। सच में वे सब कुछ पा जायेंगे। देखें मत्ती १३:२३

यह न सोचें कि प्रभु चाहते है कि आप अटल रहें जब आप उसके हो जाते हैं तब आप उसमें विश्वास कर सकते है और अपनी मदत कर सकते है उससे वाचा बान्धने को बस ऐसा करें जो आप कर सकते है। प्रभु से वाचा बान्धना सिर्फ यह दो रास्तों में सहमती हैं। यदि हम सच्चा वायदा उस पर करतें है और उस ने भी यह वायदा किया कि वह हर समय तुम्हारे साथ है (देखें मत्ती २८:२०)

वह कैसे हमारे साथ है? ये कभी न भूले कि उसका नाम हमारे साथ है हर क्षण में एकान्त समय में हम बोलते है, और वो वहा उपस्थित होता है और जब हमें सहायता की आवश्यकता होती है तो वो हमारी रक्षा करता है। और उन सारी योजनाओं को जो उसने हमारे जीवन के लिए बनाई है पूरा करने का अधिकार देता है। उस महिमामय प्रभु यीशु मसीह के नाम में सामर्थ्य है। वो इच्छा करता है कि उस सामर्थ्य को इस्तेमाल करने में हमारी सहायता करें। चंगाई देता है, स्वाभाविक और निर्लज्जता में हमें आशीष देता।

मैं प्रार्थना करती हूं कि इसी क्षण से आप प्रतिज्ञा ले कि आप हर दिन उससे एक वाचा बान्धे और भविष्य में प्रभु यीशु की सामर्थ्य में चले - नामों में सबसे श्रेष्ठ नाम.

निष्कर्ष

और उन्हें बीच में खड़ा करके पूछने लगे, कि तुमने यह काम किस सामर्थ्य से और किस नाम से किया है? तब पतरस ने पवित्रआत्मा से परिपूर्ण होकर उनसे कहा। तो तुम सब और सारे इस्त्राएली लोग जान ले कि यीशु मसीह नासरी के नाम से जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, और परमेश्वर ने मरे हुओं में से जिलाया, यह मनुष्य तुम्हारे सामने भला चंगा खड़ा है।

प्रेरितों के काम ४:७,८,१०

थोड़ा ही प्रभु यीशु मसीह की सामर्थ्य के लिये नहीं कहा जा सकता उसका नाम सबसे सामर्थी और वस्तुओं से पृथ्वी और आकाश से भी और हम विश्वासी होने के कारण हमें यह अधिकार दिया गया है कि हम उसके नाम को भी हर स्थितियों में इस्तेमाल कर सकते है। मैं नहीं सोचती इसमें कुछ भी दुःख की बात है परमेश्वर का बेटा प्रार्थनायें भी कर रहा है। और मसीही करते हैं और कोई भी सामर्थ्य न हो जीवन में अच्छे परिणाम के लिये।

प्रभु यीशु मसीह पृथ्वी पर इसलिए नहीं आया कि वो क्रूस पर मर गया और तीसरे दिन जी उठा ताकि हम कमज़ोर पड़ ज़ायें और घर जाये।

परन्तु वो इन सबसे इसलिये गुजरा कि उत्तराधिकारी ठहराये जाये। अधिकार हमारे जीवन पर और सामर्थ्य उन सभी परिस्थितियों पर राज्य करने की उसके नाम के द्वारा।

इस पुस्तक में, मेरे पास एक कुंजी है जो आप से बांट सकूं उस सामर्थ्य के विषय जो प्रभु यीशु मसीह ने मुझे दिखाया है।

आप उस सामर्थ्य को पा सकते हैं प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास ला कर, उसके नाम का आदर और सम्मान के साथ और उसके साथ सम्बन्ध रखने के द्वारा।

मुझे विश्वास है कि जैसे ही आप इन चीजों को अपने जीवन पर लागू करने लगेंगे तो अच्छी बातें होना शुरु हो जायेगी।

आपके लिये सामर्थ्य उपलब्ध है आपसे मिलने के लिए और हर ज़रुरत को पूरा करने के लिए।

जैसे ही आप उस नाम को इस्तेमाल करने के अधिकार को समझ कर रोज़मर्रा के जीवन में लागू करते हैं उन ज़रुरतों के लिए, आप उसमें बदलाव देखेंगे उस सामर्थी प्रभु यीशु मसीह के नाम के द्वारा - नामों में सबसे श्रेष्ठ नाम।

प्रभु यीशु के साथ व्यक्तिगत रिश्ता पाने के लिए प्रार्थना।

यदि आपने कभी भी प्रभु यीशु मसीह को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता नहीं माना है, तो अभी आप मानने के लिए मै आप से विनती करती हूँ। निम्नलिखित रूप में प्रार्थना कीजिए यदि आप सच्चे हृदय से करेंगे तो आपके जीवन में एक नये जीवन का एहसास होगा।

पिताजी,

आपने जगत से इतना प्रेम रखा कि आपने अपना इकलौता पुत्र दे दिया। हमारे पापों के लिए जान देने के लिए ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाये।

आपका वचन कहता है कि हम अनुग्रह के द्वारा विश्वास के कारण बचाए गए हैं जो कि एक भेंट है। उद्धार पाने के लिए हमारे पास कोई मार्ग नहीं है।

मैं विश्वास करता हूँ और अपने मुँह से मानता हूँ कि यीशु मसीह आपका बेटा है और इस जगत का उद्धारकर्ता है। मैं विश्वास करता हूँ कि वह मेरे लिए और मेरे पापों के क्रयदल के लिए सूली पर मारा गया। मैं विश्वास करता हूँ कि आपने, यीशु मसीह को मृत्यु में से जीवित किया और उठाया।

मैं आपसे मेरे पाप क्षमा करने के लिए निवेदन करता हूँ। मैं यीशु को अपना प्रभु मानता हूँ। आपके वचन के अनुसार मैं बचाया गया हूँ और हमेशा के लिए आपके साथ रहूँगा।

धन्यवाद पिताजी मैं आपका आभारी हूँ।

मसीह यीशु के नाम में माँगता हूँ। आमीन

और जानकरी के लिए कृपया पढ़े यहून्ना ३:१६, इफिसियो २:८,९, रोमियो १०:१,१०, १कुरिन्थयों १५:३,४, १ यूहन्ना १:९, ४:१४-१६, ५:१, १२,१३.

लेखिका का परिचय

जॉयस् मेयर १९७६ से परमेश्वर के वचन सिखा रही है और सम्पूर्ण सेवकाई में १९८० से है। १९९३ मे "लाइफ इन दि वर्ड" शरू किया। जायॅस का रेड़ियो और टी.वी. कार्यक्रम सारे विश्व भर में अब "एनजायिंग ऐवरीडे लाइफ" नाम से, २५० से भी अधिक स्टेशनों में सारे अमेरिका और अन्य अन्तर्राष्ट्रय देशों में प्रसारित किया जाता है। उनके उपदेशात्मक टेपों का कई देशों में आनंद लिया जाता है। जायस् का विश्वास है कि उनका दर्शन विशवासियों को परमेश्वर के वचन में स्थिर करना है।

जॉयस ने मानसिक चंगाई जैसे विषयो के बारे में देश भर में कई सभाओं मे सिखाया है, जिस कारण हजारों लोगों को लाभ हुआ है। उन्होने २२० कैसेट अलबमों को रिकार्ड किया है और ५४ से अधिक पुस्तकों की रचना की है। जिसमे प्रमुख है "बैटल फिल्ड आफ दि मायण्ड", "द जायॅ आफ बिलिविंग प्रेयर" और "सिक्रेटस टु एक्सेपशन्ल लिविंग"।

वे काफी घूमती और यात्रा करती है और हर जगह "लाइफ इन दि वर्ड" सभाओं और कलिसियाओं में वचन सिखाती है।

जायॅस और उनके पति डेव् जो कि "लाइफ इन दि वर्ड" के कार्य-प्रबन्धकर्ता है, उनका विवाहित जीवन ३१ साल का है और उनके चार बच्चे है। वे सेंट लूई, मिसौरी में रहते हैं।